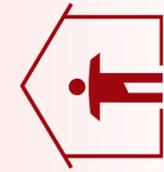


बाजार विकास के लिए हमारी पहल



राष्ट्रीय आवास बैंक

(भारतीय रिज़र्व बैंक के संपूर्ण स्वामित्व में)
कोर 5-ए, 3-5 तल, इंडिया हैबिटेड सेंटर,
लोधी रोड, नई दिल्ली - 110003



www.chiranjn.com

मुद्रण तिथि : 15-4-2010

आवास भारती





संपादक की कलम से



मुझे नव वर्ष में आपके समक्ष "आवास भारती" का जनवरी से मार्च, 2010 अवधि का अंक प्रस्तुत करते हुए सुखद अनुभूति हो रही है। यह आवास भारती का 34 वां अंक है। हमें हमेशा पाठकों का प्यार मिला है एवं पाठकों की रुचि व सुझावों को ध्यान में रखते हुए हमेशा से ही हमारा प्रयास इस पत्रिका को और अधिक आकर्षक बनाने का रहा है।

नव वर्ष के इस अंक में मैं आपसे कुछ चर्चा नव वर्ष के संकल्पों की करना चाहूंगा। नव वर्ष में मैंने देखा है कि ज्यादातर लोग यह संकल्प लेते हैं कि वे इस साल यह नहीं करेंगे या यह करेंगे। जैसे कुछ लोग यह संकल्प लेते हैं कि वह इस साल से सिगरेट नहीं पीयेंगे या कोई और गलत आदत छोड़ देंगे या कुछ यह संकल्प लेते हैं कि वह नए साल के अंत तक अपनी कोई परीक्षा अवश्य पास कर लेंगे या कुछ यह संकल्प लेते हैं कि वो अपना आचरण दूसरों के प्रति नम्रता का रखेंगे या गुस्सा नहीं करेंगे आदि-आदि।

प्रायः मैंने यह पाया है कि एक दो माह के भीतर संकल्प को हम भूल जाते हैं और फिर वही दिनचर्या एवं वही व्यवहार हम पर हावी हो जाता है जो कि संकल्प लेने से पहले था। मुझे याद है कि मेरे एक दोस्त ने इस वर्ष 1 जनवरी, 2010 को सिगरेट छोड़ने का संकल्प लिया, परंतु मार्च (2010) माह में एक दिन वो मुझे कनाट प्लेस में अपनी गाड़ी के पास धूम्रपान करते दिखा। मेरे टोकने पर उसने सरलता से जवाब दिया कि यार, एक-दो महीने तक नहीं और फिर पी ही ली।

यहां मेरा यह विश्वास एवं कहना है कि या तो आप संकल्प लें ही नहीं या ले लें तो उसे पूरा करें। संकल्प लेने से पहले यह भी विचार कर लें कि आप उस संकल्प को पूरा कर पायेंगे या नहीं। संकल्प वह ही लें, जिसे आप पूरा कर पाएं एवं संकल्प पूरा कर आप खरे उतरें, क्योंकि संकल्प की पूर्णता आपके उत्तम चरित्र को भी दर्शाती है एवं आपकी संकल्पबद्धता को भी पुष्ट करती है।

इस अंक के साथ मेरी यही कामना है कि आप इस नूतन वर्ष में लिए गए अपने संकल्प को दृढ़ता के साथ पूरा करें एवं इस वर्ष में आपके सभी सपने साकार हों।

रंजन कुमार
संपादक



आवास भारती पत्रिका के मुख पृष्ठ पर दिया गया छायाचित्र हमारे बैंक से वित्त सहायता प्राप्त आवास इकाई है जो कि तमिलनाडु के मदुरै जिले में महासेमम ट्रस्ट नाम एक सूक्ष्म वित्त (माइक्रो फाइनेंस) संस्थान के जरिए राष्ट्रीय आवास बैंक की ओर से दी गई आवास सूक्ष्म वित्त सहायता से लाभ प्राप्त करने वाले एक गृहस्वामी का मकान है। राष्ट्रीय आवास बैंक ने मदुरै, थेनी, डिंडीगुल, शिवगंगई और तिरुनेलवेली के जिलों में नए वैयक्तिक घरों के निर्माण के लिए महासेमम ट्रस्ट को आवास सूक्ष्म वित्त (हाउसिंग माइक्रो फाइनेंस) सहायता प्रदान की है। प्रत्येक घर का क्षेत्रफल 220 वर्गफीट के लगभग है। प्रत्येक घर के निर्माण की लागत 60,000/- रुपए होने का अनुमान है जिसमें प्रत्येक लाभार्थी को दिए जाने वाले ऋण की राशि 50,000/- रुपए

है। शेष राशि लाभार्थी को अपने पास से खर्च करनी होती है। लोगों ने अपने श्रम और कौशल से सस्ते एवं सुंदर घरों का निर्माण किया है। गरीबों को अपने घर का स्वामी बनाने की दिशा में राष्ट्रीय आवास बैंक की यह पहल सर्वत्र सराही गई है। गृहस्वामियों को अपने घर का मालिक होने पर गर्व है। यह आवास उत्पादकतापूर्ण है जहाँ गरीब अपने घरों से कुटीर-उद्योग का काम करते हुए आय अर्जित करते हैं।



03.03.2010

महोदय,
हमें आपके पत्र के माध्यम से उक्त विषयांकित पत्रिका के अंक की प्रति प्राप्त हुई। तदर्थ धन्यवाद!
पत्रिका का मुखपृष्ठ पत्रिका के नाम के अनुरूप सुन्दर है। इस अंक में प्रकाशित विभिन्न जानकारी/सामग्री उपयोगी एवं स्तरीय है। विशेष रूप से आवास की मूल संकल्पना, रिवर्स मॉर्टगैज ऋण-एक अनूठा उत्पाद एवं समय की पाबंदी का महत्व नामक लेख बहुत अच्छे हैं।
इस उत्कृष्ट पत्रिका के संपादन हेतु हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उत्तरोत्तर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय
सी एस परमार
उप महाप्रबंधक
सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया

19.03.2010

महोदय,
आपके पत्र दिनांक 10 फरवरी 2010 के साथ "आवास भारती" के अक्टूबर-दिसम्बर 2009 के अंक की प्रति प्राप्त हुई। धन्यवाद।
पत्रिका की रूप सज्जा आकर्षक है। पत्रिका में समाहित लेख मनसा-वाचा-कर्मणा में मन वचन कर्म के अनुसार कर्म करने पर सच्ची मानवता व पुण्य युक्त हो जाता है समय की पाबंदी लेख में जो पाठकों को प्रेरणा दी गई है वह बहुत ही लाभप्रद है। अन्य सभी लेख व सामग्री भी ज्ञानवर्धक हैं। आशा करते हैं कि आपकी पत्रिका हमें निरंतर मिलती रहेगी।
संपादन मंडल को पत्रिका के सफल संपादन हेतु हार्दिक बधाई।

भवदीय
कैलाश चन्द्र
राजभाषा अधिकारी
दि ओरियंटल इंश्योरेंस कम्पनी लिमिटेड

16.03.2010

महोदय,
राष्ट्रीय आवास बैंक की त्रैमासिक "आवास भारती", अक्टूबर-दिसम्बर, 2009 का अंक हमें प्राप्त हुआ, धन्यवाद।
पत्रिका में प्रकाशित विभिन्न विषयों के लेख/रचनाएं पठनीय एवं रोचक हैं। पत्रिका के कुशल संपादन के लिए आपकी पूरी टीम को हमारी हार्दिक बधाई।

भवदीय
ए.के. सिन्हा
उपमहाप्रबंधक एवं सचिव रा.का.स.
मेर्कॉन लिमिटेड

09.03.2010

महोदय,
पत्र संख्या रा.आ. बैंक (न.दि.)/फा.23/राजभाषा/13/2010 दिनांक 10.09.2010 द्वारा 'आवास भारती' पत्रिका अक्टूबर-दिसम्बर, 2009 का अंक प्राप्त हुआ, धन्यवाद।
पत्रिका पूर्ण रूप से राजभाषा हिन्दी को समर्पित है। पत्रिका में प्रकाशित लेख, कविता आदि काफी रोचक हैं। आशा है कि भविष्य में भी पत्रिका हमें नियमित रूप से प्राप्त होती रहेगी।
आगामी अंक के लिए शुभकामनाओं सहित,

भवदीय
पी.सी आहुजा
प्रबंधक (रा.भा.का.)
वाफ़ोस लिमिटेड

04.03.2010

महोदय,
आपके बैंक द्वारा भेजी गई अक्टूबर-दिसंबर, 2009 का आवास भारती का अंक प्राप्त हुआ।
आपकी पत्रिका का संपूर्ण कलेवर आकर्षक एवं सौंदर्यपूर्ण है और इसके अंतर्गत दी गई जानकारी बहुत ही ज्ञान वर्धक है।
आपकी पत्रिका में प्रकाशित लेख "हिन्दी सीखने से मानव सक्रिय" हिंदी सीखने वालों के लिए आशा की किरण पैदा करता है और "आवास की मूल संकल्पना" "शहरी निर्धनों के लिए ब्याज सबसिडी" लेख गरीब लोगों के लिए घर का सपना साकार करने में सहायक हो सकते हैं। इसके साथ ही "समय की पाबंदी" एवं "मनसा वाचा कर्मणा" नामक लेख और नया सवेरा कहानी प्रेरणादायक हैं। काव्य सुधा के अंतर्गत दी गई दोनों कविताएं दिल और दिमाग को झकझोरती हैं।
पत्रिका के लिए संपादक मंडल को हमारा साधुवाद एवं शुभकामनाएं।

आपका शुभेच्छु
चौधरी सुरजीत सिंह
मुख्य कार्यकारी निदेशक
तिरहर ग्रामीण विकास संस्थान

आभार

आवास भारती के अक्टूबर-दिसम्बर, 2009 अंक के बारे में पाठकों द्वारा भेजी गई सच्ची एवं स्पष्ट फीडबैक के लिए "आवास भारती" का संपादक मण्डल आभार व्यक्त करता है और पाठकों द्वारा भेजे गए सुझावों एवं विचारों का सदैव स्वागत है।

संपादक

आवास भारती

राष्ट्रीय आवास बैंक की राजभाषा पत्रिका

(केवल आंतरिक परिचालन हेतु)
पंजी. संख्या : दिल्ली इन/2001/6138

वर्ष 10, अंक 34, जनवरी-मार्च, 2010

प्रधान संरक्षक

एस. श्रीधर, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

संरक्षक

राज विकास वर्मा, कार्यपालक निदेशक

सह संरक्षक

ओ.पी. पुरी, उप महाप्रबंधक

संपादक

रंजन कुमार बरून, प्रबंधक

सहायक संपादक

अमर सिंह सचान, (राजभाषा अधिकारी)

संपादक मंडल

सौरभ शील, क्षेत्रीय प्रबंधक

किशोर कुंभारे, प्रबंधक

पीयूष पांडेय, उप प्रबंधक

आर.के.अरविंद, उप प्रबंधक

लता रस्तोगी, सहायक प्रबंधक

सुकृति वाघवा, सहायक प्रबंधक

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में अभिव्यक्त विचार, मौलिकता एवं तथ्य आदि लेखकों के अपने हैं। संपादक या बैंक का इनके लिए जिम्मेदार अथवा सहमत होना अनिवार्य नहीं है।



राष्ट्रीय आवास बैंक

(भारतीय रिज़र्व बैंक के संपूर्ण स्वामित्व में)

कोर 5-ए, 3-5 तल, इंडिया हेबिटेड सेंटर,
लोधी रोड, नई दिल्ली - 110003

विषय सूची

विषय

पृष्ठ सं.

- (1) संपादक की कलम से 01
- (2) आपकी पाती 02
- (3) राष्ट्रीय आवास बैंक परिवार समाचार 04
- (4) शहरीकरण की चुनौतियों से निपटना
फिलीपीन्स के आवासहीन लोगों का संघ
(दि फिलीपीन्स होमलेस पीपुल्स फेडरेशन) 06
- (5) मानव संसाधन विकास एवं प्रबंधन 09
- (6) औपनिवेशिक भारत में नगर नियोजन
और भवन निर्माण (भाग-1) 11
- (7) मोटापा-एक बड़ी स्वास्थ्य समस्या 14
- (8) भारत में भाषा प्रौद्योगिकी - भूत,
वर्तमान और भविष्य (भाग-1) 16
- (9) जय बाबा दिल्ली वाले की! 19
- (10) अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद : विश्व के लिए खतरा 21
- (11) होली में प्राकृतिक रंगों द्वारा स्वास्थ्य सुरक्षा 23
- (12) काव्य सुधा 24



दिनांक 6 मार्च, 2010 को मयूर विहार फेस-II, दिल्ली में रिवर्स मार्टगेज ऋण के बारे में कार्यक्रम-आयोजन :

रिवर्स मार्टगेज ऋण (आरएमएल) के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए, राष्ट्रीय आवास बैंक के प्रयास के एक भाग के रूप में, बैंक समय-समय पर विभिन्न संगठनों, विशेष रूप से वरिष्ठ नागरिकों के संघों/संगठनों के संपर्क से जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन करता रहता है। इसी क्रम में रिवर्स मार्टगेज लोन इनेबलड एनुइटी प्रोडक्ट (अर्थात् रिवर्स मार्टगेज ऋण नियमित भुगतान) के बारे में दिनांक 6 मार्च, 2010 को राष्ट्रीय आवास बैंक ने बैंक ऑफ इंडिया के साथ मिलकर मयूर विहार फेस-II दिल्ली के सामुदायिक भवन (कम्युनिटी हाल) में एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

इस कार्यक्रम में राष्ट्रीय आवास बैंक के सहायक महाप्रबंधक पी आर जयशंकर की ओर से आरएमई प्रोडक्ट के बारे में एक प्रस्तुति पेश की गई।

इस अवसर पर वरिष्ठ गणमान्य नागरिकों के साथ सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया के सहायक महाप्रबंधक श्री पी.के. गुप्ता के साथ श्री ओ.पी. श्रीवास्तव, मुख्य प्रबंधक और श्री हरीश अरोड़ा, वरिष्ठ प्रबंधक उपस्थित थे। इनके साथ दिल्ली मयूर विहार फेस-II पाकेट-बी, की वरिष्ठ नागरिक कल्याण समिति के अध्यक्ष श्री के.के.मिश्रा तथा महासचिव कर्नल के जे एस धंजाल भी उपस्थित थे।



दिल्ली बैंक नराकास द्वारा रा.आ. बैंक एवं आवास भारती प्रथम पुरस्कार से पुरस्कृत

दिनांक 20 जनवरी, 2010 की दिल्ली बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास) के द्वारा वर्ष 2008-09 के लिए राष्ट्रीय आवास बैंक की गृह पत्रिका "आवास भारती" को प्रथम पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया।

इसी अवसर पर दिल्ली बैंक नराकास द्वारा हिन्दी में अधिकाधिक काम करने के लिए राष्ट्रीय आवास बैंक को "राजभाषा शील्ड" के प्रथम पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया।

दिल्ली बैंक नराकास से लगातार दूसरे वर्ष भी दोनों प्रथम पुरस्कारों को प्राप्त करने का गौरव भी राष्ट्रीय आवास बैंक को प्राप्त हुआ। बैंक के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक तथा कार्यपालक निदेशक महोदय ने बैंक के सभी अधिकारियों को पुरस्कार प्राप्त करने पर बधाई दी और राजभाषा तथा आवास भारती की उत्तरोत्तर प्रगति जारी रखने की कामना भी की।



"आवास वित्त में धोखाधड़ी पूर्ण लेन-देन की रोकथाम" पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

दिनांक 18-19 फरवरी 2010 को मुंबई में रा.आ.बैंक के द्वारा आवास वित्त कंपनियों तथा बैंकों के लिए "आवास वित्त में धोखाधड़ी पूर्ण लेन-देन की रोकथाम" पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

इस कार्यक्रम में धोखाधड़ी की पड़ताल एवं खोजबीन, क्षेत्र ऋण (फील्ड क्रेडिट) खोजबीन, प्रविधियां एवं प्रक्रियाएं, धोखाधड़ी एवं जोखिम कम करने के विभिन्न पहलू एवं उपाय आदि विषयों के साथ धोखाधड़ी की रोकथाम पर परिचर्चा की गई। रा.आ. बैंक से सेवानिवृत्त महाप्रबंधक श्री राकेश भल्ला, भारतीय रिज़र्व बैंक के धोखाधड़ी निगरानी सेल के प्रबंधक श्री ए एस जोशी तथा एचडीएफसी लि. के वरिष्ठ महाप्रबंधक श्री सुरेश मेनन, बैंक ऑफ इंडिया के मैनेजमेंट डेवलपमेंट संस्थान के संकाय सदस्य श्री सुधाकर अत्रे, चार्टर्ड एकाउंटेंट जॉ. वी के कन्हरे तथा विभिन्न बैंकों एवं आवास वित्त संस्थानों के प्रतिभागी उपस्थित थे।

राष्ट्रीय आवास बैंक की क्रिकेट टीम ने आईएचसी सांस्थानिक टूर्नामेंट जीता

भारत पर्यावास केन्द्र (आईएचसी) के द्वारा सांस्थानिक क्रिकेट प्रतियोगिता का इस वर्ष भी आयोजन किया गया। इसमें राष्ट्रीय आवास बैंक की दो टीमों ने बैंक का प्रतिनिधित्व किया।



प्रतियोगिता में भारत पर्यावास केन्द्र परिसर स्थित में बीस संस्थानों की टीमों ने भाग लिया। टीमों को 4 पूलों में बांटा गया। इस प्रकार प्रत्येक पूल में 5 टीमों रखी गई। प्रतियोगिता के नियमों के अंतर्गत प्रत्येक पूल से टॉप दो टीमों दूसरे चरण के कप वर्ग में तथा बाद की दो टीमों प्लेट वर्ग में खेलीं और आखिरी टीमों प्रतियोगिता से बाहर हो गई।

रा.आ.बैंक-ए टीम पूल-बी में तथा रा.आ.बैंक-बी टीम पूल-डी में रखी गई। रा.आ.बैंक-बी ने अपने पूल के सभी मैच जीते तथा दूसरे चरण के लिए कप वर्ग में रखी गई। रा.आ.बैंक-ए ने चार लीग मैचों में से दो जीते तथा प्लेट वर्ग में रखी गई। दुर्भाग्यवश, बैंक की बी टीम क्वार्टर फाइनल में मात्र 6 रन से हार गई। बैंक की ए टीम ने जीत का परचम लहराते हुए क्वार्टर फाइनल जीता और फिर सेमीफाइनल में आईएलओ को तथा फाइनल में आरआईएस को हराया तथा प्लेट वर्ग की ट्रॉफी प्राप्त की।

रा.आ.बैंक की क्रिकेट टीम इस परिणाम से अत्यन्त उत्साहित है तथा यह बैंक के लिए एक अविस्मरणीय उपलब्धि है। कार्यपालक निदेशक महोदय ने सभी को बधाई दी और कहा कि हम आप सबके सहयोग तथा प्रोत्साहन के लिए आभारी हैं तथा भविष्य में भी ऐसे पदक प्राप्त करने की अपेक्षा रखते हैं।

शहरीकरण की चुनौतियों से निपटना फिलीपीन्स के आवासहीन लोगों का संघ (दि फिलीपीन्स होमलेस पीपुल्स फेडरेशन)



दि फिलीपीन्स होमलेस पीपुल्स फेडरेशन ने पूरी फिलीपीन्स के गरीब समुदायों के विभिन्न संगठनों को एक मंच पर लाकर, भूमि, मकान, आय, आधारभूत संरचना, स्वास्थ्य, कल्याण एवं समर्थकारी ऋण आदि की समस्याओं के समाधान को ढूँढने हेतु एक जुट किया है। इन सभी समूहों को एक सूत्र में बांधने वाली सामान्य चीजें हैं, उनकी अपनी बचतें एवं ऋण कार्यक्रम तथा इन बचतों के उपयोग द्वारा वे अपने जीवनस्तर को बेहतर बनाने और अपने समुदायों को सुदृढ़ बनाने तथा भूमि एवं घर बनाने का कार्य कर रहे हैं।



अनेक शहरों में ये समुदाय कई वर्षों से अनेक बचत कार्यक्रम चला रहे हैं और एक दूसरों के बीच कुछ संपर्क भी रखते थे। लेकिन इन छितरे हुए प्रयासों को एक साथ जोड़ने का विचार पिछले पांच वर्षों से आया, जब उन लोगों को भारत, दक्षिण अफ्रीका तथा थाईलैण्ड जैसे देशों के गरीब लोगों के संघों से मिलकर यह पता चला कि व्यापक स्तरीय सामुदायिक संघों में अकूत संभावनाएं विद्यमान हैं।

फेडरेशन के भागीदार गैर सरकारी संगठन—दि विन्सेंटियन मिशनरीज डेवलपमेंट फाउंडेशन के समर्थन के साथ— समुदाय विनिमय साधन का उपयोग करते हुए 18 शहरों के समूहों के बीच एक सुदृढ़ बंधन जुड़ा। ये सभी समूह भिन्नतापूर्ण ढांचे, कार्यशैली एवं स्थानीय विचारों से युक्त थे।

इस फेडरेशन का पहला राष्ट्रीय अधिवेशन सितम्बर 1998 में आयोजित हुआ और इसके आयोजनकर्ता—त्युपांग, पांगाको अर्बन—पूर एंसासियेशन थी जो पायताज में पर्वतीय कचरे के ढेर के चारों ओर फैला हुआ झोपड़पट्टी में कार्यरत हैं। इस बैठक के दौरान लगभग 1000 स्थानीय लोगों के साथ पूरे फिलीपीन्स से 200 से अधिक समुदायों के

रंजन कुमार बरुन
प्रबंधक

नेता उपस्थित हुये थे। इस अधिवेशन ने फेडरेशन के प्रक्रम के द्वारा जीवित जीवनशैली का उदाहरण पेश किया गया (यहां पर लगभग 8 स्थानी भाषाओं में भाषण दिए गए एवं अति भिन्न स्थानीय यथार्थों की परिगणना की गई थी)। इस अधिवेशन ने सरकारी ऋणों/कार्यक्रमों को बनाने, भूमि का स्वत्वधिकार, भूमि परिवर्तनीयता समस्या, स्थानीय अधिग्रहण रणनीतियों, भूमि खाली करने, स्थानीय सरकारों एवं भूमि मालिकों के साथ मोल-तोल करने तथा एनजीओ भागीदारों की भांति बराबरी के साथ भागीदारी करने जैसे मुद्दों पर जानकारी उपलब्ध कराई गई।

फिलीपीन्स के अधिकतर महानगरों/शहरों में वहनीय (समर्थनीय) भूमि एवं आवास के विकल्पों की कमी के फलस्वरूप लगभग आधी जनसंख्या अनौपचारिक बस्तियों एवं प्रतिकूल परिस्थितियों में रहने के लिए मजबूर हैं, जहां गैर कानूनी, असुरक्षित तथा पर्यावरणीय क्षरित स्थितियों में, बिना शौचालय, जल आपूर्ति एवं विद्युत आपूर्ति के साथ-साथ कभी भी खाली कराए जाने के खतरे जैसी हालत में रह रहे हैं। बिना संरक्षित भूमि, घर एवं समुदाय के फलस्वरूप अधिकाधिक गरीबों के दुर्लभ स्रोत एवं संसाधन केवल जीवन चलाने में चले जाते हैं और लोग झुग्गियों में सिमटने एवं उजड़ने के आशाहीन चक्र में फंसकर रह जाते हैं, जोकि केवल उन्हें और भी अति गरीब कर देता है तथा अपने आप विकास के मार्ग में अवरोध बन जाता है।



परिवर्तन संभव है

फेडरेशन के काम ने यह कर दिखाया कि बदलाव संभव है। इन समस्याओं का समाधान भी है और यह भी कि शहरों के गरीब निवासी भी शहरों के विकास में भागीदारी निभा सकते हैं। वे केवल अपना ही नहीं; बल्कि पूरे शहर का विकास कर सकते हैं। गृह विहीन लोगों के फेडरेशन का सबसे सशक्त पहलू यह है कि अच्छे विचारों को दर्शाने एवं फैलाने की क्षमता है।

अगली पंक्ति के शहरों के समूहों ने स्थानीय एवं राष्ट्रीय सरकारों को एक राष्ट्रीय बैठक में भूमि अधिग्रहण एवं आवास के आइडिया प्रदर्शित किए तथा पायताज में एक मॉडल हाउस की प्रदर्शनी आयोजित की। यहां पर स्थानीय अधिकारियों के साथ-साथ गरीब लोगों के 6 अन्य संघों ने तथा हाउसिंग एंड अर्बन डेवलपमेंट कोआर्डिनेटिंग काउंसिल की सचिव लेनिये ली जीसान ने आकर लोगों से मुलाकात की और उनके कामों का अवलोकन किया।



लेकिन यह उपलब्धि एक दिन में नहीं प्राप्त हुई थी, बल्कि वर्षों की तैयारी एवं विकास विकल्पों तथा भागीदारी स्थापित करने में लोगों के निवेश का परिणाम था। समुदाय के लोगों ने आवास हेतु अपनी बचतें जारी रखीं। इस फंड के साथ बचतों को मिलाकर एक आवर्ती लोन के रूप में प्रचारित किया गया जिसमें समुदाय के नेता एवं एनजीओ तथा सरकारी अधिकारी भी शामिल थे; जिसमें भूमि खरीदने, घर बनाने तथा आधारभूत संरचना तथा पूरक ऋण आदि शामिल थे।

सरकार ने विकास के लिए खाली कराई गई जमीन के कुछ वाशिंगटों को अत्याधिक अनौपचारिक तथा दूरदराज के क्षेत्रों में ठेकेदार द्वारा पुनर्स्थापना कालोनियों में मकान दिए थे। जो परिवार वहां गए उन्होंने इसे खराब डिजाइन के साथ निर्मित पाया तथा वहां जीवन यापन अति कठिन था, न तो स्कूल थे, न काम था और न ही कोई सपोर्ट सिस्टम था, अतः बहुत से परिवार उन्हें छोड़कर वापस स्थानों में भाग रहे थे।

लोग सरकार या निजी निर्माताओं की अपेक्षा स्वयं ही बढ़िया एवं सस्ता घर निर्मित कर सकते हैं। बस उन्हें थोड़ी जमीन चाहिए जो सरकार की है। लेकिन सरकार के द्वारा पुनः बसाने हेतु 22 वर्ग मी. की यूनिट के लिए 250,000 (पेसोज फिलीपीन्स की मुद्रा) (55 पेसो =1 यूएस डालर) की कीमत पड़ती थी जबकि फेडरेशन इस यूनिट से दो गुनी बड़ी यूनिट को केवल 60,000 पेसोज में बना सकता है। जहां जमीन के विकास हेतु रोड, नालियों, विद्युत एवं जलपूर्ति के लिए विकास कर्ता 500 पेसोज प्रति वर्ग मी. ले रहा था, वहीं लोग स्वयं ही यही काम 50-150 पेसोज में प्राप्त कर सकते थे।

यहां पर एक संक्षिप्त जानकारी उपलब्ध है जो होमलेस पीपुल्स फेडरेशन भूमि एवं आवास प्राप्त करने के लिए कर रहा है।

1. **भूमि एवं आवास हेतु बचत**—सभी शहरों में फेडरेशन एक विशेष आवास बचत योजना चला रहा है, जिसमें वैयक्तिक परिवारों ने 7 मिलियन पेसोज की बचत कर ली है।

2. **कम्युनिटी लेआउट तथा अधिक समर्थनीय आवास की डिजायनिंग**— डिजाइन कार्यशालाओं का उपयोग करते हुए माडल आवास की प्रदर्शनी की गई जिससे लोगों की अपनी भवन निर्माण कला तेज हुई एवं लोगों के डिजायनों के विकल्प निकलें।

3. **कानूनी दांव-पेंच समझना**—भूमि अधिग्रहण के लिए प्रशिक्षण के द्वारा कानूनी दांव-पेंच के पहलुओं को सिखाना, वित्तीय कार्यक्रमों में पहुंच बनाना तथा भूमि स्वामित्व एवं भू-परिवर्तन मामलों को समझना।

4. निजी भू-स्वामियों से लेन-देन-स्वामित्व के अभिलेखों की खोजबीन करना तथा निजी भूस्वामियों से लेनदेन, पहले से कब्जे वाले विस्थापितों से निपटना एवं समर्थनीय दरों पर लेन देन करना।

5. **सरकार की खाली जमीन का सर्वेक्षण करना तथा आवास की संभाव्यता तलाश करना**— 18 शहरों में संभावित आवास लोकेशन-साइटों की सूची तैयार करना, जो लोग झोपड़-पट्टी में रह रहे हैं, उनके निवास के उद्देश्यों को ध्यान में रखकर काम करना।

6. राष्ट्रीय एवं नगरपालिका सरकारी/प्रशासनों, निजी भू-स्वामियों, वित्तीय संस्थानों, अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों तथा एनजीओ के सहयोग से आवास के विकल्पों की खोज करना ताकि गरीबों हेतु आवास व भूमि विकल्पों को ध्यान में रखते हुए विकास हो सके।

समुदाय प्रबंधित बचतें— वह योजना जो धन एवं लोगों को जोड़ें

यह गरीबों के लिए कम ब्याजदर पर ऋण प्राप्त करने के कल्पना से भी सरलतम स्रोत है। गरीब लोगों के बेहतर जीवन हेतु संघर्ष में समुदाय प्रबंधित बचतें एवं ऋण एक मुख्य तत्व है जहां बेहतर जीवन, बेहतर आय, अधिक सुरक्षित मकान एवं अधिक स्वस्थ बस्तियां हैं। समुदाय समूह बिना बचतों के भी एक दूसरे से जुड़ सकते हैं और एक सीमित दायरे में संगठित भी हो सकते हैं। लेकिन बचतें और ऋण प्रक्रिया की



धुरी है समुदाय के पास धन एवं शक्ति दोनों होती है और लोगों के जीवन को बेहतर बनाने के लिए ये दोनों अति महत्वपूर्ण घटक हैं।

वे मानते हैं कि जब धन को सोने के रूप में निवेशित करते हैं तो वह किसी के गले का हार बनता है, पर कुछ नहीं करता है लेकिन जब यह समुदाय बचतों में जाता है तो इसकी मदद से घर बनाने में, छोटा व्यवसाय शुरू करने में, संकट में फंसे लोगों को उबारने में, स्कूल में बच्चों एवं डाक्टरों की फीस चुकाने में तथा मजबूत समुदाय बनाने में, और आस्तियां उत्पन्न करने में मदद करता है जितना ज्यादा धन होता है उतने ही ज्यादा लोगों के भविष्य के विकल्प निकलते हैं।

गरीब लोगों की छोटी-छोटी बचतें बादाम के दानों के जैसी होती हैं, लेकिन जब भारी संख्या में गरीब इन्हें एक साथ रखकर बचत करते हैं, तब यह बड़ी राशि बन जाती है। यहां पर गरीबों के बारे में असहाय एवं निर्धन के मिथक टूटते हैं और जब उनके हाथ में संसाधन होता है तब समझौते या मोल-तोल की स्थितियां बदल जाती हैं, अब वे निर्धन या भिखारी नहीं होते, बल्कि हजारों लोगों की करोड़ों में धन राशि की ताकत होती है। तब नगर पालिकाओं एवं वित्तीय संस्थानों के साथ भूमि, आवास एवं बाहरी धन प्राप्ति के लिए पहुंच आसान होती है, बल्कि वे एक समर्थ भागीदार हैं जो सबके साथ मिलकर शहरों को बेहतर बनाने में संघर्षरत हैं।

सरकार एवं समुदाय के बीच भागीदारी

जब हाउसिंग एंड अर्बन डेवलपमेंट कोआर्डिनेटिंग काउंसिल की सेक्रेटरी को फेडरेशन के द्वारा मॉडल हाउस प्रदर्शन के लिए पायताज में आमंत्रित किया गया था, तब वे डर रही थी कि वहां उन्हें क्रोधित एवं उग्र भीड़ का सामना करना पड़ेगा। लेकिन, बजाय इसके उनको व्यापक परिधि के भूमि अधिग्रहण एवं आवास निर्माण रणनीतियों के विकल्पों के साथ शानदार स्वागत किया गया।

उन्होंने देखा कि हाउसिंग फेडरेशन गैर सरकारी संगठनों के साथ घनिष्ठता से काम कर रहा है। द विन्सेटन मिशनरीज डेवलपमेंट फाउंडेशन के साथ कई वर्षों पहले मिलकर काम शुरू किया गया था। अब फेडरेशन फिलीपीन्स के 18 शहरों के एनजीओ के साथ एक व्यापक सहमति कायम करने पर काम कर रहा है। जो सर्वेक्षण एवं नई खोजों का अवलोकन कर आगे बढ़ाएंगी।

अतः संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि समुदाय न केवल सरकार या निजी क्षेत्र के विकासको की तुलना अधिक सस्ते आवास एवं सेवाएं उपलब्ध कराते हैं, बल्कि महत्वपूर्ण रूप से गरीबों को उनके संसाधनों को एक साथ जुटाकर आवास का समाधान भी उपलब्ध करा सकते हैं।

कुछ सफलता के उदाहरण :

1. लगभग 20 साल पहले क्यूजोन शहर के मध्य से स्लम को उजाड़कर दूर जंगल में जलाशय के जल ग्रहण क्षेत्र में पुनः बसाया गया। इनमें से

बहुत सारे पायताज के कूड़े कचरे को बीनकर जीवन बिताते रहे। समुदाय ने कठिन संघर्ष किया और गोल्डेन शॉवर होम ओनर एसोसिएशन गठित कर भूमि खरीदने के लिए मोल-तोल शुरू किया। बहुत मोल-तोल के बाद 1,000/- पेसोस प्रतिवर्ग मीटर का भाव तय हुआ और किरतों से भुगतान देना तय हुआ। उन्होंने कीमत बचाओ तकनीक से घर बनाए, पेड़ लगाए, जिससे गर्मी से राहत एवं स्वर्गिक सुंदरता मिली।

2. काबालाका में लगभग 1000 परिवारों की काबालाका होम ओनर्स एसोसिएशन है जिनसे अधिकतर अति गरीब एवं इधर-उधर छितराए स्लमों के लोग हैं। नवम्बर 1998 में एक सौदा के तहत भूमि खरीदी गई और इसी दौरान कालाबाका के सदस्यों ने नेशनल हाउसिंग अथॉरिटी के साथ समझौता कर कुछ अन्य भूमि खरीदने में सहायता प्राप्त की। पहले चरण में 400 परिवारों हेतु एवं दूसरे चरण में 600 परिवारों के लिए घर बनाये गए।



आज फिलीपीन्स में ऐसे अनेकों उदाहरण देखने को मिल जाएंगे, जहां विभिन्न समुदायों ने आगे बढ़कर 'सर्वधर्म समभाव' की कहावत चरितार्थ करते हुए एक नई मिसालें कायम की। उन्होंने यह साबित कर दिया कि गांव हो या शहर, कस्बा हो या महानगर। भेदभाव रहित एकता सबसे बड़ी ताकत है। अब गरीब वर्ग को उपेक्षित नहीं किया जा सकता है और शहरों को उनकी उतनी ही जरूरत है जितनी की पैसे वालों को। यहां शहर के गरीब वर्ग ने एक जुटता दिखाकर, अपनी छोटी बचतों एवं अपने श्रम और कौशल को एक सूत्र में बांधकर नई दिशाएं खोज ली और अपनी समस्याओं के लिए समाधान के रास्ते भी निकाल लिए।

भारत जैसे देश को यदि स्लमों/झोपड़पट्टियों से उबरना है तो एक जुट होकर उनके कौशल व हुनर, उनकी बचतों एवं लोगों के सामाजिक संगठनों को एक साथ मिलकर जिम्मेदारी से काम करना होगा तभी हर भारतीय के लिए अपने घर का सपना साकार हो सकेगा।

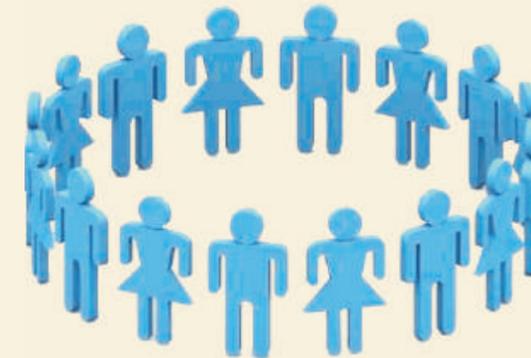
मानव संसाधन विकास एवं प्रबंधन

ओ.पी.पुरी
उप महाप्रबंधक



मानव संसाधन प्रबंधन को किसी संगठन में कार्य करने वाले व्यक्तियों के वैयक्तिक एवं सामूहिक प्रयास के द्वारा उसके व्यावसायिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए रणनीतिक एवं सुसंगत महत्व वाली युक्ति कहा जा सकता है। मानव संसाधन एक संगठन की सर्वश्रेष्ठ पूंजी होती है। मानव संसाधन को प्रबंधित करना वस्तुतः अपने कर्मियों को प्रबंधित करने का एक स्वरूप है। यदि साधारण शब्दों में कहा जाए तो मानव संसाधन प्रबंधन का अर्थ है एक संगठन के अंतर्गत लोगों को काम में लगाना, उनकी क्षमताओं को विकसित करना, उपयोग करना तथा संगठन की आवश्यकताओं के अनुसार उनकी सेवाओं एवं काम को जारी रखना, सेवाओं को क्षतिपूर्ति करना।

वास्तव में मानव संसाधनों को ठीक से उपयोग करना या प्रबंधित करना हर एक व्यक्ति की प्रतिदिन की गतिविधि होती है। एक साधारण परिवार का उदाहरण लेकर देखें, जहां पति पत्नी मिलकर या कभी-कभी इनमें कोई एक जीवनसाथी सारे नियोजन करता है। घर के काम-काज को ठीक से संपन्न करने के लिए कौन सा सदस्य घर के लिए साग-भाजी, आटा-दाल या दूध खरीदकर लाएगा। कौन बच्चों को संभालेगा एवं स्कूल छोड़ेगा तथा उनका होमवर्क पूरा कराएगा। यहां पर भी एक प्रकार से मानव संसाधन के सदुपयोग को देखा जा सकता है। प्रायः एक परिवार या कुनबे या गांव को प्रबंधित करने के पीछे कभी मानव संसाधन के उपयोग जैसी संकल्पना को संसाधन के रूप में नहीं देखा गया; हालांकि अप्रत्यक्ष रूप में भावना का निहितार्थ मानव शक्ति या संसाधन का बेहतर उपयोग ही था।



यहां प्रश्न यह उठता है कि मनुष्य या मानव एक "संसाधन" क्यों है और उसे क्या बात "विशिष्ट" बनाती है। कदाचित मानव एक सामाजिक प्राणी है और प्राणिजगत में सबसे कौशल युक्त एवं कार्यक्षम है और

दैनिक जीवन के लगभग सभी कार्य I-कलापों को निष्पादित करने में सक्षम है।

मानव के अंदर सदैव एक जिज्ञासा रही, जिसके कारण उसने प्रत्येक वस्तु को विश्लेषण की दृष्टि से देखा। तभी तो शायद पहाड़ों से बहती नदी के साथ बहते गोल पत्थरों के लुढ़कने या फिर किसी वृक्ष के कटे गोल तने को लुढ़कने की क्रिया से उसके मन में पहिए की संकल्पना ने जन्म लिया। एक पहिए की खोज ने मानव एवं मानव सभ्यता के विकास की कहानी ही बदल डाली, जहां से ज्ञान-विज्ञान और साहित्य ने जन्म लिया और इसी आधुनिक ज्ञान-विज्ञान की देन में मानव को भी एक "संसाधन" बना दिया जिसे बेहतर नियोजन करके अच्छे परिणाम पाए जा सकते हैं।

मानव संसाधन प्रबंधन एवं मानव संसाधन विकास दो विधाएं हैं और इनके अंतर्गत समस्त मानवीय क्रियाकलाप समाहित हैं। मानव



संसाधन प्रबंधन से पहला चरण मानव संसाधन विकास का है। प्रायः लोग इन दोनों विधाओं को एक ही मान लेते हैं। जिससे भ्रम की स्थिति पैदा होती है। मानव संसाधन विकास के अंतर्गत मानव शक्ति को विश्लेषित कर उनकी रुचि एवं कौशल के अनुकूल उन्हें तैयार करना होता है। मानव संसाधन विकास के अंतर्गत मानव के आंतरिक व्यक्तित्व एवं कौशल को विकसित एवं नियोजित करना होता है। उदाहरण के रूप में -कैरियर का विकास, प्रशिक्षण, संगठनात्मक विकास आदि।

मानव संसाधन प्रबंधन का कार्य मानव संसाधन विकास के बाद शुरू होता है यानि कि एक प्रशिक्षित एवं कौशल युक्त व्यक्ति को सही कार्य एवं दिशा में लगाना होता है। आज दुनिया भर के लगभग तमाम संगठनों में अपने यहां मानव संसाधन विभाग स्थापित किए हुए हैं जिनका कार्य मानव संसाधन विकास एवं मानव संसाधन प्रबंधन का



होता है यह विभाग प्रायः अपने संगठन के अनुसार कर्मचारी चयन एवं उनके कौशल अनुकूल कार्य देना, प्रशिक्षण देना तथा लोगों को प्रबंधित करने में मदद देना होता है। ताकि वे अपनी अधिकतम क्षमता के अनुसार निष्पादन कर सकें।

हाल ही में, कई देशों में मानव संसाधन प्रबंधन को टेलेंट मैनेजमेन्ट जैसे शब्दों से जाना जा रहा है। जिसके अंतर्गत कर्मचारियों को आकर्षित करना (जिसे टेलेंट हंट), उनका विकास और बाद में अपने संगठन में अधिकाधिक अवधि तक रोककर सेवाएं प्राप्त करने जैसी गतिविधियां शामिल होती हैं। कुछ संगठन/कार्यालय इस शब्द का विशेष रूप से कौशल युक्त एवं/या उच्च संभावनाओं/सक्षमताओं वाले कर्मचारियों के लिए प्रयुक्त करते हैं।

यू तो मानव संसाधन प्रबंधन एक व्यापक परिधि की विषय-वस्तु है, किन्तु आधुनिक युग में विज्ञान, तकनीक की विशिष्टताओं के मद्देनजर इसे मुख्यतः निम्नलिखित क्षेत्रों में रखा गया है—

- संगठनात्मक प्रबंधन
- कार्मिक प्रबंधन
- मानव शक्ति प्रबंधन
- औद्योगिक प्रबंधन

उपरोक्त परंपरागत विशिष्टताएं वस्तुतः सैद्धांतिक रूप में भिन्न अवश्य हैं, पर कई बार ये एक दूसरे की पूरक भी बन जाती हैं।

वास्तविक जीवन में एक उद्यमी अपने कार्मिकों के लिए एक सकारात्मक भाव रखता है और यह मानता है कि सभी लोग एक उद्यम में अपना योगदान देकर उसकी उत्पादकता को बढ़ाते हैं, लेकिन यहां पर मुख्य बाधा कर्मचारी नहीं बल्कि उनके ज्ञान की कमी, अपर्याप्त प्रशिक्षण, एवं प्रक्रम की असफलता होती है।

मानव संसाधन प्रबंधन कार्यक्षेत्र में एक डाक्टर की भांति होते हैं जो मर्ज की नब्ज पकड़कर समाधान खोजता है। इसका कार्य है कि कार्यस्थल पर उद्यम के प्रबंधक विशिष्टता के साथ लक्ष्य तय करें, ताकि कार्यबल (मानवशक्ति) उसे अपने हाथ में ले और अपने उत्तरदायित्व को सफलतापूर्वक पूरा करें। यही मानव संसाधन प्रबंधन तकनीक है जो लक्ष्यों को प्रकट कर उद्यम की अपेक्षा के अनुकूल निष्पादित कराती है। इसे कार्मिक प्रबंधन भी कहते हैं।

बहुत लम्बे समय से एक बहस जारी है कि क्या बड़े संगठनों द्वारा मानव संसाधन विकास नियोजित करना चाहिए या फिर केवल उन्हें मानव संसाधन प्रबंधन करना चाहिए। यदि देखा जाए तो आज बहुत सारे ऐसे संस्थान खुल गए हैं जो मानव संसाधन का विकास कर रहे हैं।

मानव संसाधन प्रबंधन में अनेक घटक सन्निहित होते हैं। मानव संसाधन प्रबंधन एवं मानव संसाधन विकास दोनों मिलकर एक सर्वोत्तम निष्पादकता दे सकते हैं। मानव संसाधन विकास को बाहरी स्रोतों से कराया जा सकता है या फिर संगठन के अंतर्गत विभिन्न विभागों के साथ मिलकर भी किया जा सकता है। मानव संसाधन प्रबंधन एवं मानव

संसाधन विकास मिलकर निम्न कार्यों को निष्पादित कर सकते हैं जिससे संगठन को आर्थिक लाभ हो सकता है—

- कार्यबल नियोजन
- भर्ती (आकर्षित करना व चुनना)
- सम्मिलित ओरियंटेशन एवं निरंतरता
- कौशल प्रबंधन
- प्रशिक्षण व विकास
- कार्मिक प्रशासनिकता
- पारिश्रमिक/वेतन के रूप में क्षतिपूर्ति
- यात्रा प्रबंधन (यदा-कदा)
- पे रोल (यदा-कदा)
- कर्मचारी लाभ प्रशासनिकता
- कार्मिक मूल्य नियोजन
- निष्पादकता मूल्यांकन
- श्रम संबंध



मानव संसाधन विकास एवं मानव संसाधन प्रबंधन एक ही सिक्के के दो पहलू हैं और एक दूसरे के पूरक भी। एक कार्मिक का चुनना, प्रशिक्षण देना एवं कौशल युक्त बनाना जितना महत्वपूर्ण है, उतना ही महत्वपूर्ण यह भी है कि उस कौशल युक्त प्रशिक्षित कार्मिक को क्या लक्ष्य सौंपे जाएं, वह किसमें सर्वोच्च निष्पादकता प्रदर्शित कर सकता है।

आज के युग में जब विश्व सिमट कर एवं वैश्विक ग्राम की संज्ञा पा चुका है, ऐसे समय पर मानव संसाधन विकास एवं प्रबंधन की महती भूमिका है। आज कार्य निष्पादन के लिए जहां विज्ञान एवं तकनीकी का साधन उपलब्ध है, वहीं प्रतियोगिता भी तेजी से बढ़ी है। इस प्रतियोगिता की दौड़ में वही संगठन आगे बढ़ पाएंगे जो अपने मानव संसाधनों के विकास एवं प्रबंधन में दक्ष होंगे।

औपनिवेशिक भारत में नगर नियोजन और भवन निर्माण (भाग-I)

राजीव कुमार श्रीवास्तव
प्रबंधक



इस लेख में हम औपनिवेशिक भारत में शहरीकरण की प्रक्रिया पर चर्चा करेंगे, औपनिवेशिक शहरों की चारित्रिक विशिष्टताओं का अन्वेषण करेंगे और बड़े शहरों — मद्रास, कलकत्ता तथा बम्बई (मुंबई) के विकासक्रम को गहनता से देखेंगे। तीनों शहर मूलतः मत्स्य ग्रहण तथा बुनाई के गांव थे। वे इंग्लिश ईस्ट इंडिया कम्पनी की व्यापारिक गतिविधियों के कारण व्यापार के महत्वपूर्ण केन्द्र बन गये। कम्पनी के एजेंट 1639 में मद्रास तथा 1690 में कलकत्ता में बस गये। 1661 में बम्बई को ब्रिटेन के राजा ने कम्पनी को दे दिया गया था, जिसे उसने पुर्तगाल के शासक से अपनी पत्नी के दहेज के रूप में प्राप्त किया था। कम्पनी ने इन तीन बस्तियों में व्यापारिक तथा प्रशासनिक कार्यालय स्थापित किये। यद्यपि मद्रास, कलकत्ता और बम्बई, तीनों औपनिवेशिक शहर पहले के भारतीय कस्बों और शहरों से अलग थे लेकिन उनमें कुछ साझे तत्व थे और उनके भीतर कुछ अनूठी बातें पैदा हो चुकी थीं। इनकी जाँच करने पर औपनिवेशिक शहरों के बारे में हमारी समझ में निश्चय ही इजाफा होगा। इस अंक में मद्रास (चेन्नई) और कलकत्ता (कोलकाता) की चर्चा करेंगे। अगले अंक में बम्बई (मुंबई) की चर्चा करेंगे।



मद्रास में बसावट और पृथक्करण

कम्पनी ने अपनी व्यापारिक गतिविधियों का केन्द्र सबसे पहले पश्चिमी तट पर सूरत के सुस्थापित बंदरगाह को बनाया था। बाद में वस्त्र उत्पादों की खोज में अंग्रेज़ व्यापारी पूर्वी तट पर जा पहुँचे। 1639 में उन्होंने मद्रासपट्टन में एक व्यापारिक चौकी बनाई। इस बस्ती को स्थानीय लोग चेनापट्टनम कहते थे। कम्पनी ने वहाँ बसने का अधिकार स्थानीय तेलुगू सामंतों, कालाहस्ती के नायकों से खरीदा था जो अपने इलाके में व्यापारिक गतिविधियों को बढ़ाना चाहते थे। फ्रेंच ईस्ट इंडिया कम्पनी के साथ प्रतिद्वंद्विता के कारण अंग्रेजों को मद्रास की किलेबन्दी करनी पड़ी और अपने प्रतिनिधियों को ज्यादा राजनैतिक व प्रशासकीय जिम्मेदारियाँ सौंप दीं। 1761 में फ्रांसीसियों की हार के बाद मद्रास और सुरक्षित हो गया। वह एक महत्वपूर्ण व्यावसायिक शहर के रूप में विकसित होने लगा।

फोर्ट सेंट जॉर्ज : सेंट जॉर्ज किला व्हाइट टाउन का केंद्रक बन गया जहाँ ज्यादातर यूरोपीय रहते थे। दीवारों और बुर्जों ने इसे एक खास किस्म की घेरेबंदी का रूप दे दिया था। किले के भीतर रहने का फ़ैसला रंग और धर्म के आधार पर किया जाता था। कंपनी के लोगों को भारतीयों के साथ विवाह करने की इजाज़त नहीं थी। डच और पुर्तगालियों को यूरोपीय ईसाई होने के कारण वहाँ रहने की छूट थी। प्रशासकीय और न्यायिक व्यवस्था की संरचना भी गोरों के पक्ष में की थी। संख्या की दृष्टि से कम होते हुए भी शासक थे और मद्रास का विकास शहर में रहने वाले मुठ्ठी भर गोरों की जरूरतों और सुविधाओं के हिसाब से किया जा रहा था। ब्लैक टाउन किले के बाहर विकसित हुआ। अठारहवीं सदी के पहले दशक के मध्य में उसे ढहा दिया गया ताकि किले के चारों तरफ एक सुरक्षा क्षेत्र बनाया जा सके। इसके बाद उत्तर की दिशा में दूर जाकर एक नया ब्लैक टाउन बसाया गया। इस बस्ती में बुनकरों, कारीगरों, बिचौलियों और दुभाषियों को रखा गया था जो कंपनी के व्यापार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे। नया ब्लैक टाउन परंपरागत भारतीय शहरों जैसा था। वहाँ मंदिर और बाजार के इर्द-गिर्द रिहाइशी मकान बनाए गये थे। शहर के बीच से गुज़रने वाली आड़ी-टेंड़ी संकरी गलियों में अलग-अलग जातियों के मोहल्ले थे। चिन्ताद्रीपेट इलाका केवल बुनकरों के लिए था। वाशरमेनपेट में रंगसाज और धोबी रहते थे। रोयापुरम में ईशाई मल्लाह रहते थे जो कंपनी के लिए काम करते थे। मद्रास को बहुत सारे गाँवों को मिला कर विकसित किया गया था। दुबाश ऐसे भारतीय लोग थे जो स्थानीय भाषा और अंग्रेजी, दोनों को बोलना जानते थे। वे एजेंट और व्यापारी के रूप में काम करते थे और भारतीय समाज व गोरों के बीच मध्यस्थ की भूमिका निभाते थे। वे संपत्ति इकट्ठा करने के लिए सरकार में अपनी पहुँच का इस्तेमाल करते थे। ब्लैक टाउन में परोपकारी कार्यों और मंदिरों को संरक्षण प्रदान करने से समाज में उनकी शक्तिशाली स्थिति स्थापित होती थी।



शुरुआत में कंपनी के तहत नौकरी पाने वालों में लगभग सारे वेल्लालार होते थे। यह एक स्थानीय ग्रामीण जाति थी जिसने ब्रिटिश शासन के कारण मिले नए मौकों का बढ़िया फायदा उठाया। उन्नीसवीं सदी में अंग्रेजी शिक्षा के प्रसार से ब्राह्मण भी शासकीय महकमों में इसी तरह के पदों के लिए जोर लगाने लगे। तेलुगू कोमाटी समुदाय एक ताकतवर व्यावसायिक समूह था जिसका शहर के अनाज व्यवसाय पर नियंत्रण था। अठाहरवीं सदी से गुजराती बैंकर भी यहाँ मौजूद थे। पेरियार और वन्नियार गरीब कामगार वर्ग में ज्यादा थे। आरकोट के नवाब पास ही स्थित टिरप्लीकेन में जा बसे थे जो एक अच्छी-खासी मुस्लिम आबादी का केंद्र बन गया। इससे पहले माइलापुर और टिरप्लीकेन हिंदू धार्मिक केंद्र थे जहाँ अनेक ब्राह्मणों को भरण-पोषण मिलता था। सान थोम और वहाँ का गिरजा रोमन केथलिक समुदाय का केंद्र था। ये सभी बस्तियाँ मद्रास शहर का हिस्सा बन गईं।

इस प्रकार, बहुत सारे गाँवों को मिला लेने से मद्रास दूर तक फैली अल्प सघन आवादी वाला शहर बन गया। इस बात पर यूरोपीय यात्रियों का भी ध्यान गया और सरकारी अफसरों ने भी उस पर टिप्पणी की। जैसे-जैसे अंग्रेजों की सत्ता मजबूत होती गई, यूरोपीय निवासी किले से बाहर जाने लगे। गार्डन हाउसेज; बगीचों वाले मकान सबसे पहले माउंट रोड और पूनामाली रोड, इन दो सड़कों पर बनने शुरू हुए। ये किले से छावनी तक जाने वाली सड़कें थी। इस दौरान संपन्न भारतीय भी अंग्रेजों की तरह रहने लगे थे। परिणामस्वरूप मद्रास के ईर्द-गिर्द स्थित गाँवों की जगह बहुत सारे नए उपशहरी इलाकों ने ले ली।

कलकत्ता में नगर नियोजन

आधुनिक नगर नियोजन की शुरुआत औपनिवेशिक शहरों से हुई। इस प्रक्रिया में भूमि उपयोग और भवन निर्माण के नियमन के जरिए शहर के स्वरूप को परिभाषित किया गया। इसका यह मतलब यह था कि शहरों में लोगों के जीवन को सरकार ने नियंत्रित करना शुरू कर दिया था। इसके लिए एक योजना तैयार करना और पूरी शहरी परिधि का स्वरूप तैयार करना जरूरी था। यह प्रक्रिया अकसर इस सोच से प्रेरित होती थी कि शहर कैसा दिखना चाहिए और उसे कैसे विकसित किया जाएगा। इस बात का भी ध्यान रखा जाता था कि विभिन्न स्थानों को कैसे व्यवस्थित करना चाहिए। इस दृष्टि से पिवकास की सोच और विचारधारा प्रतिबिम्बित होती थी और उसका क्रियान्वयन जमीन, उसके बाशिंदों और संसाधनों पर नियंत्रण के जरिए किया जाता था। इसकी कई वजह थीं कि अंग्रेजों ने बंगाल में अपने शासन के शुरु से ही नगर नियोजन का कार्यभार अपने हाथों में क्यों ले लिया था। एक वजह तो रक्षा उद्देश्यों से संबंधित थी।

1756 में बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला ने कलकत्ता पर हमला किया और अंग्रेज व्यापारियों द्वारा माल गोदाम के तौर पर बनाए गए छोटे किले पर कब्जा कर लिया। ईस्ट इंडिया कंपनी के व्यापारी नवाब के संप्रभुता पर लगातार सवाल उठा रहे थे। वे न तो कस्टम ड्यूटी चुकाना चाहते थे और न ही नवाब द्वारा तय की गई कारोबार की शर्तों पर काम करना चाहते थे। सिराजुद्दौला अपनी ताकत का लोहा मनवाना चाहता था। कुछ समय बाद ईस्ट इंडिया कंपनी ने एक ऐसा नया किला बनाने का फैसला किया जिस पर आसानी से हमला न किया जा सके।

कलकत्ता को सुतानाजी, कोलकाता और गोविंदपुर, इन तीन गाँवों को मिल बनाया गया था। कंपनी ने इन तीनों में सबसे दक्षिण में पड़ने वाले गोविंदपुर गाँव की जमीन को साफ करने के लिए वहाँ के व्यापारियों और बुनकरों को हटने का आदेश जारी कर दिया। नवनिर्मित फोर्ट-विलियम के ईर्द-गिर्द एक विशाल जगह खाली छोड़ दी गई जिसे स्थानीय लोग मैदान या गोरेर-मठ करने लगे थे। खाली मैदान रखने का मकसद यह था कि अगर दुश्मन की सेना किले की तरफ बढ़े तो उस पर किले से बेरोक-टोक गोलाबारी की जा सके। जब अंग्रेजों को कलकत्ता में अपनी उपस्थिति स्थायी दिखाई देने लगी तो वे फोर्ट से बाहर मैदान के किनारे पर भी आवासीय इमारतें बनाने लगे। कलकत्ता में अंग्रेजों की बस्तियाँ इसी तरह अस्तित्व में आनी शुरू हुईं। फोर्ट के ईर्द-गिर्द की विशाल खुली जगह, जो अभी भी मौजूद है यहाँ की एक पहचान बन गई। यह कलकत्ता में नगर - नियोजन की दृष्टि से पहला उल्लेखनीय काम था।



कलकत्ता में नगर-नियोजन का इतिहास केवल फोर्ट विलियम और मैदान के निर्माण के साथ पूरा होने वाला नहीं था। 1798 में लॉर्ड वेलेजली गवर्नर जनरल बने। उन्होंने कलकत्ता में अपने लिए गवर्नमेंट हाउस के नाम से एक महल बनवाया। यह इमारत अंग्रेजों की सत्ता में आने का प्रतीक थी। आ जमने के बाद लॉर्ड वेलेजली शहर के हिन्दुस्तानी आबादी वाले हिस्से की भीड़-भाड़, जरूरत से ज्यादा हरियाली, गंदे तालाबों, सड़ांध, निकासी की खस्ता हालत को देखकर परेशान हो उठा। अंग्रेजों को इन चीजों से इसलिए परेशानी थी क्योंकि उनका मानना था कि दलदली जमीन और ठहरे हुए पानी के तालाबों से जहरीली गैसें निकलती हैं जिनमें बीमारियाँ फैलती हैं। उष्णकटिबंधीय जलवायु को जैसे भी स्वास्थ्य के लिए हानिकारक मानते थे। इससे बचने का एक तरीका यह ढूँढा गया कि शहर में खुले स्थान छोड़े जाएँ।

वेलेजली ने 1803 में नगर-नियोजन की आवश्यकता पर एक प्रशासकीय आदेश जारी किया और इस विषय में कई कमेटियों का

गठन किया। बहुत सारे बाजारों, घाटों, कब्रिस्तानों और चर्मशोधन इकाइयों को साफ किया गया या हटा दिया गया। इसके बाद जनस्वास्थ्य एक ऐसा विचार बन गया जिसकी शहरों की सफाई और नगर-नियोजन परियोजनाओं में बार-बार दुहाई दी जाने लगी। वेलेजली की विदाई के बाद नगर-नियोजन का काम सरकार की मदद से लॉटरी कमेटी (1817) ने जारी रखा। लॉटरी कमेटी का यह नाम इसके लिए पड़ा, क्योंकि नगर सुधार के लिए पैसे की व्यवस्था जनता के बीच लॉटरी बेचकर की जाती थी।

इसका मतलब है कि उन्नीसवीं सदी के शुरुआती दशकों तक शहर के विकास के लिए पैसे की व्यवस्था करना अभी भी केवल सरकार की नहीं बल्कि संवेदनशील नागरिकों की जिम्मेदारी ही माना जाता था। लॉटरी कमेटी ने शहर का एक नया नक्शा बनवाया, जिससे कलकत्ता की एक आबादी वाले हिस्से में सड़क-निर्माण और नदी किनारे से अवैध कब्जे हटाना शामिल था। शहर के भारतीय हिस्से को साफ-सुथरा बनाने की मुहिम में कमेटी ने बहुत सारी झोंपड़ियों को साफ कर दिया और मेहनतकश गरीबों को वहाँ से बाहर निकाल दिया। उन्हें कलकत्ता के बाहरी किनारे पर जगह दी गई।

अगले कुछ दशकों में महामारी की आशंका से नगर-नियोजन की अवधारणा को और बल मिला। 1817 में हैजा फैलने लगा और 1896 में प्लेग ने शहर को अपनी चपेट में ले लिया। चिकित्सा विज्ञान अभी इन बीमारियों की वजह स्पष्ट नहीं हो पाया था। सरकार ने उस समय के स्वीकृत सिद्धांत - जीवन परिस्थितियों और बीमारियों के फैलाव के बीच सीध संबंध होता है - के अनुसार कार्रवाई की। इस सोच को द्वारकानाथ टेंगोर और रुस्तमजी कोवासजी जैसे शहर के जाने-माने हिंदुस्तानियों का समर्थन हासिल था। उन लोगों का मानना था कि कलकत्ता को और ज्यादा स्वास्थ्यकर बनाना जरूरी है। घनी आबादी वाले इलाकों को अस्वच्छ माना जाता था, क्योंकि वहाँ सूरज की रोशनी सीधे नहीं आ पाती थी और हवा निकासी का इन्तजाम नहीं था। इसीलिए कामकाजी लोगों की झोंपड़ियों या बस्तियों को निशाना बनाया गया। उन्हें तेजी से हटाया जाने लगा। मजदूर, फेरी वाले, कारीगर और बेरोजगार, यानी शहर के गरीबों को एक बार फिर दूर वाले इलाकों में ढकेल दिया गया। बार-बार आग लगने से भी निर्माण नियमन में सख्ती



की जरूरत दिखाई दे रही थी। उदाहरण के लिए, 1836 में इसी आशंका के चलते फूस से झोंपड़ियों को बनाना अवैध घोषित कर दिया गया और मकानों में ईंटों की छत को अनिवार्य बना दिया गया।

उन्नीसवीं सदी आते-आते शहर में सरकारी दखलंदाली और ज्यादा सख्त हो चुकी थी। वो जमाना लद चुका था जब नगर-नियोजन को सरकार और निवासियों, दोनों की साझा जिम्मेदारी माना जाता था। वित्तपोषण सहित नगर-नियोजन के सारे आयामों को सरकार ने अपने हाथों में ले लिया। इस आधार पर और ज्यादा तेजी से झुग्गियों को हटाया जाने लगा और दूसरे इलाकों की कीमत पर ब्रिटिश आबादी वाले हिस्सों को तेजी से विकसित किया जाने लगा। स्वास्थ्यकर और अस्वास्थ्यकर के नए विभेद के सहारे व्हाइट और ब्लैक टाउन वाले नस्ली विभाजन को और बल मिला। नगर निगम में मौजूद भारतीय नुमाइंदों ने शहर के यूरोपीय आबादी वाले इलाकों के विकास पर जरूरत से ज्यादा ध्यान दिए जाने का विरोध किया।

इन सरकारी नीतियों के विरुद्ध जनता के प्रतिरोध ने भारतीयों के भीतर



उपनिवेशवाद विरोधी और राष्ट्रवादी भावनाओं को बढ़ावा दिया। जैसे-जैसे ब्रिटिश साम्राज्य फैला, अंग्रेज कलकत्ता, बम्बई और मद्रास जैसे शहरों को शानदार शाही राजधानियों में तब्दील करने की कोशिश करने लगे। उनकी सोच से ऐसा लगता था मानो शहरों की भयत्ता से ही शाही सत्ता की ताकत प्रतिबिम्बित होती है। आधुनिक नगर-नियोजन में ऐसी हर चीज़ को शामिल किया गया जिसके प्रति अंग्रेज अपनेपन का दावा करते थे : तर्कसंगत क्रम-व्यवस्था, सटीक क्रियान्वयन, पश्चिमी सौंदर्यात्मक आदर्श। शहरों का साफ और व्यवस्थित, नियोजित और सुंदर होना जरूरी था।

(शेष अगले अंक में...)

मोटापा-एक बड़ी स्वास्थ्य समस्या



मशीनीकरण एवं औद्योगिकीकरण में तेजी से हुई प्रगति का परिणाम यह हुआ कि पहले जो काम मानव अपने कठिन परिश्रम से पूरे करता था, वे सारे काम, आज चुटकी बजाते ही यांत्रिक सहायता से संपन्न हो जाते हैं। एक छोटा सा उदाहरण लीजिए कि पहले एक किसान बैलों से खेतों की जुताई करते हुए एक-एक दिन में एक खेत के सैंकड़ों चक्कर लगाते हुए पचासों किमी. पैदल चल लेता था। तब उसे तेज भूख लगती थी और भरपूर नींद भी आती थी। वे लोग चुस्त-दुरुस्त होते थे। देखने में मोटे-तगड़े भले ही न लगते हों पर सालों बीमार नहीं पड़ते थे और 80 से 90 वर्षों तक आराम से सक्रिय जीवन जीते थे। पर आज वहीं काम टैक्टर से बिना कठिन परिश्रम किए एक घंटे में पूरा हो जाता है।

अभी हाल ही में मेरे दोस्त गांव गए और दो-चार दिन बाद लौटकर आए तो बड़े प्रसन्नचित दिख रहे थे। जब मैंने पूछा तो उन्होंने बताया कि अमां यार मैं यहां दिल्ली में बा-मुश्किल पांच से छह घंटे सो पाता हूँ और तीन-चार चपातियों में ही पेट भर जाता है। पर गांव में तो मैं सात-आठ घंटे की पक्की नींद लेता था। वहां तो भोजन भी भरपूर खाता था, सच कहूँ तो यहां से दुगुना भोजन किया करता था।

उन्होंने यह भी बताया कि शहरों में प्राप्त होने वाले फलों एवं सब्जियों में तरह-तरह के कीटनाशक एवं दवाइयाँ छिड़की जाती हैं, ताकि अधिक दिन तक संरक्षित रहें, जबकि गाँवों में की ताजी सब्जियाँ प्राप्त होती हैं।

वास्तव में, आज भी गाँवों के लोगों को पर्याप्त कठिन श्रम करना पड़ता है, इसलिए उन्हें मधुमेह (डायबिटीज) एवं मोटापे जैसी व्याधियाँ नहीं होती हैं। अभी हाल ही में एक पत्रिका में एक सर्वेक्षण की रिपोर्ट छपी है जिसके अनुसार शहरों की 36% से अधिक स्त्रियाँ मोटापे की चपेट में हैं जबकि गाँव में केवल 10.5% ही, इसका मुख्य कारण शहरों की जीवन शैली है। इस मोटापे से न केवल मानव की सक्रियता घटती है, बल्कि मधुमेह, हृदय रोग, गुर्दा एवं लीवर की बिमारियाँ भी घेर लेती हैं। कुल मिलाकर मोटापा मानव के स्वास्थ्य पर कोई न कोई दुष्प्रभाव अवश्य छोड़ता है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन का अनुमान है कि अगले दशक में विभिन्न बीमारियों से ग्रस्त व्यक्तियों की संख्या भारत में सबसे अधिक होगी। फिर चाहे वह मोटापा हो या मधुमेह, हृदयाघात हो या गुर्दे की पथरी, यौन संचारित रोग हो या एचआईवी/एड्स/ यहां तक कि टीबी (तपेदिक) एवं आंत्र रोगों के (दूषित पेयजल के कारण) के सर्वाधिक मरीज भी भारत में होंगे।

सवाल उठता है कि भारत में तेजी से मोटापेपन में वृद्धि क्यों हो रही है और विशेष रूप से इनमें महिलाओं की संख्या पुरुषों से ज्यादा है। यदि भारत की आजादी के बाद की अवधि पर एक नज़र दौड़ाई जाए तो कुल मिलाकर पूरे भारत में विकास एवं प्रगति का फायदा पहुंचा है। लोगों के जीवन स्तर में सुधार हुआ है और यह प्रगति शहरी क्षेत्रों में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

भारत में अधिकतर महिलाएं घर पर रहने वाली होती हैं जो घरेलू काम काज निपटाती हैं फलतः उनको बाहर आने जाने एवं कठिन श्रम के काम नहीं करने पड़ते और इस तरह से धीरे-धीरे उनके शरीर के भार

में वृद्धि होती रहती है। इसी प्रकार से गर्भावस्था के दौरान भी भार में काफी वृद्धि हो जाती है और प्रसव होने के पश्चात उचित व्यायाम आदि न करने के कारण पूर्व अवस्था नहीं प्राप्त हो पाती है और मोटापे का चक्र जारी रहता है। वैसे भी भारतीय लोगों में, खासकर स्त्रियों में, जिम जाने या व्यायाम एवं योग करने की प्रवृत्ति कम पाई जाती है, हालांकि बड़े शहरों में अब युवतियाँ एवं महिलाएं काफी सजग हो गई हैं और व्यायाम करना पसंद करती हैं, फिर भी इनका अनुपात काफी कम है। चूंकि खान-पान का स्तर भी बढ़ चुका है, फलतः भार में वृद्धि और मोटापे के रूप में प्रकट होता है।

वैज्ञानिकों के अनुसार मोटापे के कुछ प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं—

1. आवश्यकता से अधिक आहार (कैलोरी) लेना : भारत जैसे लगभग सभी एशियाई देशों में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता की कमी के कारण लोग दिनभर खाते रहते हैं। उनके भोजन में चिकनाई युक्त एवं मीठे आहारों की मात्रा काफी अधिक होती है।

2. जीवन शैली में बदलाव : आज मनुष्य के स्वास्थ्य के सबसे बड़े दुश्मन है— टीवी, वीडियोगेम्स, कम्प्यूटर, रिमोट कंट्रोल, वाशिंग मशीन, डिशवाशर्स, माइक्रोवेब—ओवन तथा अन्य तमाम आधुनिक सुविधाजनक घरेलू उपकरण। इनके कारण लोगों की शारीरिक गतिविधियाँ बहुत सीमित हो गई हैं, कठिन श्रम नहीं करना पड़ता और घर पर लेते हुए या बैठे हुए काम निपट जाते हैं नतीजा शरीर में आलस्य, मोटापा और अस्वस्थताएं अपनी जगह बना लेती हैं।



3. पर्याप्त एवं समयानुकूल नींद न लेना या देर तक सोना : पर्याप्त नींद न लेने से भी मोटापा तेजी से बढ़ता है। आजकल टीवी, वीडियो, सिनेमा, देर रात क्लबों एवं पार्टियों वाली जीवन शैली के कारण लोग देर रात में सोते हैं, देरे से उठते हैं, फिर भी नींद पूरी नहीं होती। इसके साथ ही दिनचर्या गड़बड़ होने से शरीर का चयापचय गड़बड़ हो जाता है। जिस का परिणाम अस्वस्थताएं एवं मोटापा तथा मानसिक अशांति होती है। इसके साथ बहुत अधिक सोने वालों के भार

में भी वृद्धि होती है, क्योंकि नींद में उतनी कैलोरी नहीं खर्च होती, जितनी की जागृत अवस्था में।

4. गलत आहार का चुनाव : प्राचीन काल से भारत में आहार-विहार के लिए कुछ नियम प्रचलित थे। सूरज डूबने के साथ भोजन करना और उसके दो तीन घंटे बाद सो जाने को प्राथमिकता दी गई थी। साथ ही यह भी बताया गया था कि प्रातः एवं दोपहर में गरिष्ठ भोजन किया जाए और शाम को हल्का आहार लिया जाए।

आजकल आधुनिक चिकित्सा (एलोपैथी) ने इन सारी मान्यताओं को समाप्त कर दिया और यह नारा दिया कि "जब जो मन चाहे, तब वह ही खाएं" हालांकि, अब पश्चिमी जगत में कई अध्ययनों ने यह साबित किया है कि भारत की आहार परंपरा स्वास्थ्य की दृष्टि से सर्वोत्तम थी। आजकल के फास्ट फूड एवं शीतल पेयों तथा चाय-कॉफी के बढ़ते उपयोग ने अस्वास्थ्य एवं मोटापे के लिए अनेक राहें खोल दी हैं।

5. दवाएं एवं टानिक : कई बार रोगनाशन के लिए जो औषधियाँ एवं टानिक आदि दिए जाते हैं वे दीर्घकालिक दुष्प्रभाव डालती हैं और, जिसका एक रूप मोटापा होना भी है। यहां ध्यान देने योग्य बात यह है कि मोटापा केवल शरीर की स्थूलता तक सीमित नहीं होता बल्कि इसे कई अप्रत्यक्ष एवं प्रत्यक्ष प्रभाव भी देखे जा सकते हैं; यथा :



• **हड्डियों एवं घुटनों की समस्याएं :** अधिक भारी शरीर के कारण हड्डियों पर जोर पड़ता है तथा अस्थियाँ कमजोर पड़ने लगती हैं तथा घुटनों पर भार पड़ने से ये पीड़ादायक हो जाती हैं। संघिशोथ एवं वात रोग के कष्ट बढ़ जाते हैं। इसीलिए डाक्टर प्रायः यह सलाह देते हैं कि सबसे पहले अपना वजन कम कीजिए। तभी दवा-उपचार का लाभ प्राप्त होगा।

• **हृदय व धमनियों के रोग :** मोटापे के कारण शरीर में वसा की मात्रा बढ़ जाती है और हृदय की रक्तवाहिनियाँ (धमनी व शिराएं) अवरोधित होने लगती हैं, फलतः हृदयघात, रक्तचाप, जैसी समस्याएं जन्म लेती हैं।

• **बुद्धिकौशल में कमी :** अधिक मोटे लोग जहां शारीरिक रूप से चुस्ती एवं फुर्ती में पिछड़े होते हैं, वहीं इसका अप्रत्यक्ष प्रभाव उनके बौद्धिक विकास पर भी पड़ता है। एक अध्ययन के अनुसार मोटे लोगों की बौद्धिक प्रखरता/तीव्रता मंद होती है एवं वे साधारण स्वस्थ लोगों की तुलना में कम प्रखर बुद्धि होते हैं।

• **मूत्राशय के रोग :** सामान्यतः मोटापे के कारण ठीक से मूत्र विर्सजन नहीं हो पाता एवं उचित सफाई नहीं कायम हो पाती। पूर्णतः मूत्राशय न खाली होने से बैक्टीरिया पनप कर ज्वलनशीलता आदि की तकलीफें पैदा करते हैं।

• **अस्वस्थता की स्थिति में देखरेख न हो पाना :** यदि मोटे व्यक्ति अस्वस्थ हो जाते हैं तो अधिक भार के कारण उनकी उचित देखरेख वे

साफ-सफाई कायम नहीं रह पाती। उन्हें मल-मूत्र विर्सजन में दिक्कत होती है और कई बार तो यहाँ तक देखा गया है कि अत्यंत मोटे लोग ये क्रियाएँ बिस्तर पर ही करते हैं फलस्वरूप बेडसोर, त्वचा की सड़न जैसी समस्याएं बढ़ जाती हैं। मोटे लोगों को गरमी अधिक लगती है और पसीना भी ज्यादा आता है।

• **मोटापे से बचने के उपाय :** मोटापे के बारे में बचपन से ही ध्यान देने की आवश्यकता होती है। माँ-बाप को चाहिए कि अति प्यार एवं लाड़ दिखाने के चक्कर में अपने बच्चे को मीठी-चीजें, जैसे चाकलेट, आइस्क्रीम, फास्टफूट, साफ्ट ड्रिंक इत्यादि न दें जो मोटापे को बढ़ाते हैं। हाल ही में देश के पब्लिक स्कूल में किए गए सर्वेक्षण से प्रकट हुआ है कि यहां पढ़ने वाले 50 प्रतिशत से अधिक बच्चे भार वृद्धि या मोटापे के शिकार हैं।



मोटापे से बचने में खान-पान की आदतों का बहुत महत्व है। फास्टफूड एवं पेय पदार्थ तथा तैलीय पदार्थों से युक्त आहारों से बचा जाए। एक बढ़िया जीवनशैली का मतलब सभी तरीके के सुख-साधनों एवं उपकरणों को भोगना मात्र नहीं है, बल्कि उनका लाभ उठाने के साथ-साथ खुद को चुस्त-दुरुस्त रखना भी है।

आजकल चाहे घर में रहने वाले हो या दफ्तर में काम करने वाले, चूंकि कठिन श्रम नहीं करना पड़ता। दफ्तर में काम के लिए जहां एक ही मेज-कुर्सी पर बैठे रहते हैं, वहीं घरों में लोग टीवी के सामने बैठे रहते हैं, जोकि स्वास्थ्य की दृष्टि से बेहद खतरनाक हैं। प्रत्येक व्यक्ति को एक दिन में कम से कम तीन किमी. तेज़ गति से टहलना चाहिए।

यहां स्वास्थ्य के मामले में यह कहावत बिल्कुल सही बैठती है— "अपना हाथ जगन्नाथ" यानि कि अपने हाथ में ही संसार का नाथ (स्वामी है) वैसे ही अपने हाथ में अपना स्वास्थ्य है। यदि उचित जीवनशैली, खान-पान, आहार-विहार का अपनाया जाए। थोड़ा ध्यान, योग एवं आसन-व्यायाम नियमित रूप से किए जाएं तो आप निश्चित ही स्वस्थ व शतायु बन सकते हैं।



भारत में भाषा प्रौद्योगिकी - भूत, वर्तमान और भविष्य (भाग-I)



कम्प्यूटर की उच्च परिकलन शक्ति से अभिभूत होते हुए, (जिसका अविष्कार 1940 में हुआ), वैज्ञानिक कम्प्यूटर को अधिक से अधिक तकनीक से सम्पन्न कर रहे हैं। 1950 के दशक के आरंभ में शब्द कृत्रिम वृद्धि (एआई) गढ़ा गया। इसका अर्थ है कि डिजिटल मशीन से ऐसे काम कराए जाएं, जिनके लिए मानव-जैसी-बुद्धि की जरूरत होती है। धीरे-धीरे वैज्ञानिकों ने तकनीकी अपार क्षमता और ज्यादा विकसित सिस्टम तैयार किए। समाज की जमीन पर ये इलैक्ट्रॉनिक युक्तियां धीरे-धीरे अपनी जड़े फैली रही हैं। अब जन-सुविधाओं से चिकित्सा निदानों, घरेलू मनोरंजन से अंतरिक्ष कार्यक्रमों, सरल परिकलनों से जटिल गणितीय माडलिंग, वित्तीय सिस्टमों आदि के अनुप्रयोगों के लिए कम्प्यूटर सिस्टम उपलब्ध हैं।

कम्प्यूटरों को जैसे-जैसे समाज के ताने-बाने में बुना जा रहा है, ज्यादा से ज्यादा अनुप्रयोगों की गवेषणा हो रही है। अभी हाल तक, कम्प्यूटरों का प्रयोग अंग्रेजी बोलनेवाले समुदाय तक सीमित था। इस सीमा को देखते हुए, अंग्रेजी पर इसकी पकड़ ढीली करने के सफल प्रयास किए गए हैं। कम्प्यूटरों को उन भाषाओं के अनुरूप बनाने में ज्यादा समय नहीं लगा जो रोमन लिपि का प्रयोग करती हैं। तथापि रोमन लिपि की बजाए विभिन्न भाषाओं के प्रदर्शन और मुद्रण के लिए काफ़ी प्रयास किए गए हैं।

एक विशाल बहुभाषी समाज में, जैसा हमारा है, जहां संस्कृति और भाषाओं की अत्यधिक विभिन्नता है, वहां मानव संचार एक बड़ा मुद्दा है। चूंकि व्यवसाय और व्यापार का फैलाव हो रहा है इसलिए, व्यापारिक कार्यकलापों का विस्तार करने के लिए लोगों को बाहर जाना पड़ता है। ऐसे परिदृश्य में प्रत्येक मानव को विवश होकर एक से अधिक भाषाएं सीखनी पड़ती हैं ताकि अन्य लोगों के साथ सम्प्रेषण कर सके।

आरंभिक प्रयास (1980-90 के दौरान) भारतीय भाषाओं के हितों को ध्यान में रखते हुए डी ओ ई ने 1979 में 'कम्प्यूटर आधारित सूचना प्रोसेसिंग की भाषाई जटिलताओं पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया। शायद इस क्षेत्र में डी ओ ई द्वारा समर्थित यह पहली संगोष्ठी थी। इसके फलस्वरूप विभिन्न शिक्षा-संस्थानों और आर एंड डी संगठनों में डी ओ ई टेक्नालोजी विकास परिषद, टी डी आई के अधीन लगभग दस प्रोजेक्ट आरंभ किए गए। अधिकांश प्रोजेक्ट योग्यता निर्माण प्रकृति के थे। तथापि आई आई टी कानपुर में 'बहुभाषी कम्प्यूटर

सहायक प्रबंधक

टर्मिनल का विकास' आगे निकल गया और तत्काल अनुप्रयोग प्राप्त किया। 1985 में लगभग 10 कंपनियों को टेक्नालोजी स्थानांतरित की गई ताकि वे उत्पादन और विपणन करें। इस उत्पाद को अब जी आई एस टी टर्मिनल के नाम से जाना जाता है।

1980 के दशक के आरंभ में (जी आई एस टी) (ग्राफिक्स और बुद्धि-आधारित स्क्रिप्ट टेक्नालोजी) का विकास एक भारी सफलता थी। डी ओ ई प्रायोजित प्रोजेक्ट के रूप में जी आई एस टी का विकास भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर में आरंभ किया गया और उन्नत कम्प्यूटिंग के लिए विकास केन्द्र (सी-डेक) पुणे में इस पूर्णरूप दिया गया। भारतीय भाषाओं के लिए आई टी अनुप्रयोगों को बढ़ावा देने में (सी-डेक) ने एक पथ-प्रदर्शक कार्य किया है। जिस्ट कम्प्यूटर मानिटर पर विभिन्न भारतीय लिपियों का प्रदर्शन करता है। जो संबंधित भारतीय लिपियों के ओवरले वाले की-बोर्ड के माध्यम से दर्ज सूचना पर आधारित होता है। इन विकासों के आधार पर भारतीय लिपियों में प्रयुक्त कीज के लिए और उनके अभिविन्यास का भारतीय मानक ब्यूरो ने मानकीकृत किया है इस विकास के कारण कई साफ्टवेयर प्रोडक्ट बने हैं जो अब बाज़ार में उपलब्ध हैं।



यह देखा गया कि विद्वत्परिषदों के व्यक्ति अनुसन्धान कार्यकलापों के अलावा विभिन्न आर एंड डी संगठनों और शैक्षणिक संस्थाओं द्वारा विभिन्न अनुसन्धान कार्यकलाप और विकासात्मक प्रोजेक्ट आरंभ किए गए हैं। इन सब प्रयासों को एक छत के नीचे रखने के लिए इलैक्ट्रॉनिक विभाग ने 1987 में भारतीय भाषाओं के लिए इलैक्ट्रॉनिक टूल्स के विकास, उनके प्रवर्तक अनुप्रयोग क्षेत्रों, प्रौद्योगिकी मूल्यांकन और अनुसन्धान निष्कर्षों विस्तारित सिस्टम में समेकन पर संकेन्द्रित

था। इसके अलावा, डी ओ ई की विभिन्न योजनाओं के अधिन कुछ और प्रोजेक्टों का निधियन भी किया गया है जिसमें टी डी सी और ज्ञान आधारित कम्प्यूटर सिस्टम (के बी सी एस) विकास प्रोजेक्ट शामिल हैं। इन प्रोजेक्टों में से अधिकांश उच्च गुणता अनुसन्धान अभिकल्प और विकास का लक्ष्य रखते हैं।

इसके बाद दिसम्बर 1987 में 'कम्प्यूटर पोषित सीखने/सिखाने (सी ए एल टी) में भाषा और कलाएं' पर समिति स्थापित की गई जिसका काम था कि भाषा और कला प्राक्षिण शक्षिण कार्यक्रम में एक विषय के रूप में (सी ए एल टी के लिए) उपयुक्त पाठ्यक्रम तैयार करें। यह रिपोर्ट अगस्त 1988 में प्रस्तुत की गई और समिति की मुख्य सिफारिशों निम्नानुसार हैं—

- बी. एड स्तर पर एक प्रारंभिक (सी ए एल टी) पाठ्यक्रम और (एम. एड) स्तर पर उन्नत (सी ए एल टी) पाठ्यक्रम आरंभ किए जाएं। इस पाठ्यक्रम को शैक्षणिक टेक्नालोजी या कार्य-अनुभव (बी. एड) के लिए और वैकल्पिक/विशेषज्ञता के रूप (एम. एड) में उपलब्ध स्लाट में रखा जाए।
- समिति ने (सी ए एल टी) पाठ्यक्रमों के लिए विस्तृत पाठ-विवरण का प्रारूप भी तैयार किया।
- प्राध्यापक वर्ग के प्रनभिविन्यास के लिए समिति ने सुझाव दिया कि तकनीकी प्राक्षिण संस्थान (टी टी ई) माडुलक प्राक्षिण कार्यक्रम और शरद और ग्रीष्म कालीन छुट्टियों के दौरान छः सप्ताह का गहन पाठक्रम संचालित करें।
- समिति ने मूल आधारित रचना की भी सिफारिश की जिसमें (एल ए एन) और आलम्बी 6-8 बहु-भाषा टर्मिनल के माध्यम से योजित दो पीसी और एक भारतीय भाषा प्रिंटर शामिल है।

समिति ने भाषा और कला प्रोसेसिंग, स्पीच जानकारी, ज्ञान प्रस्तुतीकरण, पढ़ाई सिस्टमों, कम्प्यूटेशनल लेक्सिकन, भाषाविलेखन आदि के क्षेत्रों में कई आर एवं डी प्राजेक्टों के समर्थन की भी सिफारिश की। इन समितियों की सिफारिश के आधार पर और भारतीय भाषाओं में कम्प्यूटरों के महत्व को स्वीकार करते हुए जरूरी था कि विभिन्न क्षमता निर्माण कार्यकलापों को समेकित करके एक प्रोग्राम के अन्तर्गत रखा जाए।

अतः आठवी योजना के दौरान, यह निर्णय लिया गया कि भारतीय भाषाओं के लिए भाषा प्रौद्योगिकी को अधिक प्रणोद दिया जाए। तदनुसार एक बड़ा प्रोग्राम आरंभ करने का फैसला किया गया जो गुणता, राष्ट्रीय प्रासंगिकता और परम्परागत ज्ञान की भागीदारी पर संकेन्द्रित हो और भारतीय भाषाओं में सूचना प्रोसेसिंग के क्षेत्र में आर एंड डी प्रयासों को समेकित करे। डी ओ एल ने वर्ष 1990-91 में इस दिशा में 'भारतीय भाषाओं के लिए तकनीकी विकास प्रोग्राम राष्ट्रीय स्तर पर निम्नलिखित उद्देश्यों के साथ आरंभ किया :

1. मानव-माशीन अन्वयक्रिया भारतीय भाषाओं में सूचना प्रोसेसिंग और बहुभाषा ज्ञान सिस्टम को आगे बढ़ाने के लिए सूचना प्रोसेसिंग टूल्स विकसित करना।

2. भाषा अध्ययनों और अनुसन्धान के लिए सूचना प्रोसेसिंग टूल्स के प्रयोग को बढ़ावा देना

3. भारतीय भाषाओं में सूचना प्रोसेसिंग के क्षेत्र में आर एंड डी प्रयासों का समर्थन करना जिसमें माशीन अनुवाद, मानव-माशीन अन्वयक्रिया, भाषा पढ़ाई और स्वाभाविक भाषा प्रोसेसिंग शामिल है।

1990-95 के दौरान कार्यकलाप और उपलब्धियां :

कार्पोरा विकास — भारतीय भाषाओं यानी तामिल, तेलगू, कन्नड़, मलयालम, असमी, बंगला, उड़िया, हिन्दी, पंजाबी, संस्कृत, कश्मीरी और उर्दू में लगभग 30 लाख शब्दों के टेक्स्ट का मशीन पठनीय कार्पोरा विकसित किया गया है और मराठी, गुजराती और सिन्धी में यह कार्य पूरा हो रहा है और मनीपुरी, नेपाली, कोंकनी में कार्य प्रगति पर है।

वर्ड काउंट, आवृत्ति काउंट और कार्पोरा के व्याकरणिक टैगिंग के लिए भी साफ्टवेयर विकसित किया गया और साथ ही इन भाषाओं में से कुछ के लिए स्पेल-चैकर भी विकसित किए गए थे।



मशीन ससहाय अनुवाद — कन्नड़ से हिन्दी भाषा युगल के लिए एक माशीन ससहाय अनुवाद सिस्टम (अनुसरिका) का प्रदर्शन किया गया है। इस टेक्नालोजी का अन्य भाषाओं यानी तेलगू, मलयालम, तामिल और बंगला के लिए हिन्दी में अनुवाद के लिए विकास किया जा रहा है।

मानव-माशीन इन्टरफेस सिस्टम (एच यू एम ई एस) कैरिक्टर पहचान देवनागरी टेक्स्ट के लिए विभिन्न बिम्ब प्रोसेसिंग और पैटर्न पहचान ऐल्गोरिथम का विकास किया गया है। मुद्रित देवनागरी टेक्स्ट के लिए (ओ सी आर) सिस्टम के लिए एक संभाव्यता सिस्टम का प्रदर्शन किया गया। बोलचाल की हिन्दी के 1000 शब्दों के लिए ध्वनिक-ध्वन्यात्मक विशेषता के स्पीच डेटाबेस का विकास किया गया है। यह सुझाव है कि इन प्रोजेक्टों का विस्तार किया जाए ताकि पहचाने गए अनुप्रयोगों में प्रयोग के लिए टेक्स्ट से स्पीच सिन्थेसिस सिस्टम के साथ (ओ सी आर) सिस्टम को समेकित किया जाए।



स्वाभाविक भाषा प्रोसेसिंग-प्राक्षिक प्राक्षिण कार्यक्रम (एन एल पी-टी टी पी) — भाषाविदों और भाषा अध्यापकों के लिए 7 विभिन्न केन्द्रों पर (एन एल पी-टी टी पी) पाठ्यक्रम आरंभ किए गए और तदनुसार 500 से अधिक अध्यापकों को इस प्रोग्राम के अन्तर्गत प्रशिक्षित किया गया। इससे भाषाविदों और भाषा विशेषज्ञों के बीच भारतीय भाषाओं में सूचना प्रोसेसिंग के लिए प्रयोग के बारे में जागरूकता उत्पन्न हुई।

कम्प्यूटर ससहाय पढ़ाई और प्राक्षिण (सी ए एल टी) — बी.एड/एम.एड के पाठ विवरण में (सी ए एल टी) पाठक्रम के आरंभ करने के लिए चार साधन केन्द्रों की पहचान की गई। 215 विद्यार्थियों ने इन पाठक्रमों में भाग लिया और 175 सेवारत अध्यापकों को भी (सी ए एल टी) में प्रशिक्षण दिया गया। इन प्रोजेक्टों में से कुछ में हिन्दी के लिए आथरिंग सिस्टम विकसित किए गए। इन्टेलिजेन्ट ट्यूटरिंग सिस्टमों के विकास से भारतीय भाषाओं के कम्प्यूटर-ससहाय शिक्षण/पढ़ाई की संभाव्यता भी स्थापित की गई।

स्वाभाविक भाषा प्रोसेसिंग के मूलतत्त्व (एफ-एन एल पी) — संस्कृत अधिकांश भारतीय भाषाओं की जननी है इसलिए संस्कृत में स्वाभाविक भाषा से संबंधित विशिष्ट विकास आरंभ किए गए जिनका प्रभाव दूसरी भारतीय भाषाओं पर भी पड़ा। संस्कृत विद्वान शब्दबोध का प्रयोग करके संस्कृत वाक्यों के अर्थगत विलेखण पर अनुसन्धान कर रहे हैं। पाणिनी व्याकरण पर आधारित धातु से व्युत्पन्न संज्ञा और क्रिया रूपों की उत्पत्ति, विलेखण और पहचान के लिए सरल संस्कृत वाक्यों के व्याकरण-सम्मत विलेखण के लिए माडूल विकसित किए गए हैं। पाणिनी व्याकरण के कम्प्यूटेशनल रूपांतर और देसिका के विकास के लिए एक प्रोजेक्ट आरंभ किया गया था।

मशीन-ससहाय अनुवाद — तेलगू से हिन्दी अनुवाद के लिए अनुसारका लैब प्रदर्शन सिस्टम के क्षेत्र परीक्षण किए जा रहे हैं ताकि वेब के माध्यम से उपभोक्ता पुनर्निवेश प्राप्त किए जाए। इस सिस्टम के विकास के लिए अपनाया उपागम निम्नानुसार है :

चूंकि एक स्वचल सामान्य प्रयोजन मशीन अनुवाद अभी केवल दूर की बात है इसलिए इस दिशा में कोई प्रयास नहीं किया गया। विश्वभर के विभिन्न विशेषज्ञों के अनुभवों से यह शिक्षा प्राप्त हुई। इस सिस्टम में कुछ प्रकार के समझौते की गुंजाइश है और व्याकरणिक उल्लंघनों के रूप में उत्पन्न निर्माण में छूट दी जाती है। इस प्रकार सिस्टम द्वारा उत्पादित निर्गम पूर्णतः व्याकरण-सम्मत नहीं होता लेकिन स्रोत टेक्स्ट के अर्थ या पाणिनी संकल्पना को प्रेषित करता है। भारतीय भाषाओं का अपेक्षाकृत मुक्त-शब्द सुव्यवस्थितता, उनकी अभिलिष्ट प्रकृति और अत्यधिक संक्रामिक अभिलक्षणों से भी लाभ उठाया गया है।

स्रोत भाषा के वाक्यों का पाणिनी ढांचे के अन्तर्गत विलेखण किया जाएगा और प्रकार सिस्टम को भारतीय भाषाओं के लिए उपयुक्त बनाया जाएगा। इस सिस्टम का प्रयोग करते हुए एक तेलगू पाठक गैर-तेलगू

भाषा भाषी व्यक्ति को तेलगू में ई-मेल भेज सकेगा। डाक को अनुसारक सिस्टम को भेजा जाता है जो उसे पठनीय हिन्दी डाक में परिवर्तित करती है। भेजने वाला डाक को प्रेषित को वापस भी भेज सकता है।

शब्दकोश, स्पेल चैकर और टूलविकास — भारतीय भाषाओं के लिए शब्दकोश साधनों (तामिल, तेलगू, मराठी, बंगला और हिन्दी) पर एक प्रोजेक्ट विकासाधीन है। प्रोजेक्ट का उद्देश्य उपर्युक्त भाषाओं में विभिन्न शब्दों के समानार्थक शब्द अर्थ और उद्घरण की पहचान करना है। पंजाबी के लिए स्पेल चैकर प्रोजेक्ट पूरा हो गया है। बंगला में रूपात्मक उपागम पर आधारित स्पेल चैकर के विकास के लिए एक नया प्रोजेक्ट आरंभ किया है जिसमें नेत्रहीनों के लिए स्पीच निर्गम रहेगा और इसे वर्ड प्रोसेसर के साथ समेकित करने का सुझाव है।

मानव-मशीन इंटरफेस सिस्टम — हिन्दी के लिए स्पीच सिन्थेसिस सिस्टम के अनुसार पीसी आधारित टेक्स्ट का विकास किया जा रहा है। इस सिस्टम में क्लाउट साइन्थेसिस उपागम का प्रयोग किया गया है। इस सिस्टम का लक्ष्य अपरिमित शब्द-भंडार है। इस सिस्टम का वर्ण तैयार रूपांतर अब तैयार है और इसे क्षेत्र परीक्षणों के शीघ्र मोचित्र किया जाएगा।



वेब-आधारित अनुप्रयोग

इन्टरनेट पर वर्तमान अनुप्रयोगों के होते हुए, इन्टरनेट पर भारतीय भाषाओं के लिए प्रयोग को समर्थित करने के लिए भारतीय भाषा प्रोसेसिंग में कुछ विकास आरंभ किए गए हैं। वेब तक पहुंच और कन्टेंट उत्पत्ति और हिन्दी में ई-मेल भेजने और प्राप्त करने के लिए इन्टरनेट टूल्स और प्रौद्योगिकियों के विकास पर एक नया प्राजेक्ट आरंभ किया गया है।

(शेष अगले अंक में...)

जय बाबा दिल्ली वाले की!

अमर सिंह सचान
(हिन्दी अधिकारी)



दिल्ली में आजकल दस-बारह जगहों पर कोई न कोई हवन, यज्ञ, उपदेश आदि के कार्यक्रम चलते रहते हैं। जो ईश्वर, योग, ध्यान आदि पर भाषण तो देते ही हैं कभी-कभी राजनीति, मंहगाई व खेलों पर भी भाषण देते हैं। इंसान के पास जब पैसा आता है तो मन अशांत एवं उद्धिग्न रहने लगता है फलतः उसे शांति की तलाश होती है मानव की इसी कमजोरी का फायदा उठाने के लिए आजकल बाबाओं, कथावाचकों, योगाचार्यों की जमात तेजी से बढ़ रही है। मुझे भी ऐसे ही एक बाबा के प्रवचन सुनने का मौका मिला। मौका क्या बस मेरी धर्मपत्नी खींच ले गई, बोली बड़े ऊंचे दर्जे के महात्मा है। चलो उनके उपदेश सुनकर हम लोग भी अपना लोक परलोक सुधारें। सारी दिल्ली न जाने कब की अपना लोक-परलोक सुधार चुकी है। हम ही पीछे क्यों रहे। मैंने कहा हॉ, भागवान चलो, हमी पीछे क्यों रहें। वहाँ पहुँचकर और बाबा की भव्यता देखकर मैं लोक-परलोक दोनों भूल गया।

बाबा जी लोगों को बता रहे थे, भक्तगणों! क्या आप लोगों को पता है कि कामनवेल्थ गेम्स जैसे अंतर्राष्ट्रीय खेलों का जीवन में कितना महत्व है जिस शहर में खेल आयोजित होते हैं उसकी काया ही बदल जाती है। सड़कें व स्टेडियम तो ही बनते हैं। उसके साथ ही पर्यटन को भी बढ़ावा मिलता है। खेलों के लिए निर्माण कार्य बढ़ जाता है इसलिए खास तौर पर इंजीनियरों और ठेकेदारों के जीवन में तो विशेष महत्व है। एक स्टेडियम के निर्माण से न जाने कितनी कोठियां निकल आती हैं। पश्चिमी जगत के इंजीनियर भले ही इसे न समझें कि भारत में यह कमाल होता है कि सड़क निर्माण से कोठियां निकल जाती हैं और फ्लाइओवर से फार्महाउस।



खैर, भक्तगणों! अंतर्राष्ट्रीय खेलों से हमें जीवन के कई पाठ सीखने को मिलाते हैं। जैसे एक बंदा कई बार कड़ी मेहनत से खेल में सर्वोच्च स्थान पा लेता है पर उसे खेल की अर्थोरिटी के पास चक्कर प चक्कर लगाने पड़ते हैं। महीनों गुजर जाते हैं और खिलाड़ी को (क्योंकि कुछ अधिकारियों की सेवा करना भूल गया था) कोचिंग संस्थानों में भाग लेना नसीब नहीं होता है। उसे हर दिन यही लगता है वह जहां था,

अभी भी वही खड़ा है। यहां पर खिलाड़ी कम और अधिकारी एवं नेता स्पोर्ट हास्टलों का अधिक फायदा उठाते हैं।

भक्तगणों! अब अगर अंतर्राष्ट्रीय खेल आयोजित हो रहे हैं तो शहरों के यातायात को सुगम बनने के लिए सड़कें चौड़ी होती हैं और भीड़-भाड़ युक्त चौराहों पर फ्लाइओवर बनते हैं। ये फ्लाइओवर जब नए-नए बनते हैं तो, एकाध महीने ट्रैफिक आसान रहता है, फिर वही हाल हो लेता है। यानी अब फ्लाइओवर पर फ्लाइओवर की जरूरत महसूस होती है। फिर उस फ्लाइओवर के ऊपर भी फ्लाइओवर की जरूरत पड़ सकती है और हो सकता है कि कुछ समय बाद एक फ्लाइओवर अर्थोरिटी ऑफ इंडिया या फ्लाइओवर मंत्रालय ही बन जाए। इसमें एक मंत्री और कुछ अफसरों की पोस्टिंग का जुगाड़ हो जाएगा। तब हम कह सकेंगे कि खेलों का अफसरों के जीवन में भी अत्यंत महत्व है।

भक्तगणों, आपकी दिल्ली में इन दिनों सड़कों का चौड़ीकरण, फुटपाथ निर्माण, स्ट्रीटलाइट नवीनीकरण तथा फ्लाइओवर की धूम है। इधर से फ्लाइओवर, उधर से फ्लाइओवर। फ्लाइओवर बनने के चक्कर में विकट जाम हो रहे हैं। इन जामों में फंसकर स्वतः ही संयम जैसे गुणों का विकास हो जाता है। शुरु-शुरु में तो लोग सरकार को कोसते हैं, नगर निगम को गाली देते हैं, कि सारी दिल्ली को एक साथ खोदने की क्या जरूरत है। एक सड़क या फ्लाइओवर पूरा करते तब अगले का काम शुरु करते। पर क्या करे सरकार मजबूर है। अगर तीन चार साल पहले काम शुरु करती तो उसकी दूरदर्शिता लोगों को दिख जाती, जो कि वह नहीं दिखाना चाहती। वना आम आदमी भी दूरदर्शिता का गुण सीख लेगा। हमारी सरकार भी कबीर दास जी उपदेश सही अर्थ में अपना रही हैं, "काल करे जो आज कर, आज करे सो अब" यानि जो कल कर लेना था उसे आज करो और आज वाला काम अब करो (जरूरत से ठीक पहले)।

हे भक्तगणों! मैं तो कहूंगा कि दिल्ली वालों को सरकार एवं नगरपालिका का शुकुगुजार होना चाहिए जिसने हम दिल्लीवासियों को जीवन का सबसे बड़ा गुण धैर्य बनाए रखना सिखाया है। हमारे अंतर के धैर्य ने हमारे रक्त को इतना ठंडा बना दिया है कि चाहकर भी गुरसा नहीं आता। मंहगाई ने आसमान छू लिया पर हमारा खून नहीं खोला। हम पिछले डेढ़ दो सालों से सरकार की कुव्यवस्थाओं का शिकार हैं पर फिर भी हम धैर्य एवं मौन भाव से देखते रहते हैं क्योंकि हम लोगों ने धैर्य पर विजय प्राप्त कर ली है। ऐसा धैर्य पाने के लिए लोग वर्षों गुफा, कंदराओं एवं पर्वतों में जाकर तपस्या करते हैं फिर भी यह दैव दुर्लभ चीज प्राप्त नहीं होती है। एक आप दिल्ली वासी है जिसे सरकार की कृपा से यह गुण मुफ्त में मिल रहा है। हम लोग हर रोज घंटों सड़क जाम में फंसकर धैर्य की तपस्या करते हैं। इसलिए भक्तों एक बार साथ मिलकर बालो जय हो दिल्ली वालों की।

भक्तगणों! अंतर्राष्ट्रीय खेलों की कृपा से जहां सड़कें, फ्लाइओवर, पक्के फुटपाथ प्राप्त होने की उम्मीद तो रहती ही है साथ ही नई बसें, मेट्रो रेल और दूसरी परिवहन व्यवस्थाओं के विकास की संभावनाएं भी बढ़ जाती है। पिछले दो चार सालों में दिल्ली में नेताओं से लेकर



ठेकेदारों ने इतनी कमाई कर ली होगी कि उन्हें चार छह पीढ़ियों तक कुछ काम करने की जरूरत नहीं पड़ेगी। इनमें से मेरे कुछ भक्तों की दानशीलता से ही हमारे आश्रम के खर्च चलते हैं और हम उन के पापों को धोने में सहायता करते हैं।

भक्तगणों! हमारे ठेकेदार, अफसर, नेता आदि चले आजकल बड़े प्रसन्न हैं। कहते हैं बाबा जी, कितने मजे की बात है, इनमें से बहुत सारे काम तुगलकी फरमान जैसे होते हैं, जहां सोच विचार करने की जरूरत नहीं समझी जाती है। ठीक दो साल पहले पूरी दिल्ली के बस स्टॉप नए बनाए गए। ठीक साल भर बाद उन्हें तोड़ दिया गया और उनकी जगह स्टील ढाँचे वाले बस स्टॉप बनाए गए। बस स्टॉप तैयार हुए कि सड़क चौड़ी की जाने लगी अब वे बस स्टॉप सड़कों के अंदर पहुंच गए तो उन्हें फिर से तोड़कर बनाया जा रहा है। ऐसे सारे काम हमारे लिए तो वरदान हैं। हमारे चले खुश है तो हम भी खुश हैं।

भक्तगण! आप तो जानते हैं ठीक इसी तरह से पहले फुटपाथ बने और सड़क के बीच डिवाइडर बन गए। फिर बिजली के नए खंभे लगाने के लिए फुटपाथ और डिवाइडर को तोड़कर गड़बे खोद दिए गए। फिर खुदाई कर तार डाले गए। अब फिर दोबारा फुटपाथ और डिवाइडर बन रहे हैं। इसी प्रकार दिल्ली की कई सड़कों के किनारे साल भर पहले पक्के नाले बने थे। अब सड़क चौड़ी हो रही है तो नाले तोड़कर दुबारा से दो तीन फिट हटाकर नाले पुनः बनाए जा रहे हैं। एक दो जगहों पर तो पहला ठेकेदार नाला बनाकर हट भी नहीं पाया कि पीछे से दूसरा उसकी खुदाई कर दो फुट और आगे करके बना रहा है।



भक्तगणों! एक दिन मैंने देखा कि सड़क के जाम में फंसे कुछ लोग चिल्ला रहे थे कि दिल्ली को सरकार चला रही है या ठेकेदार, लोगों ने कहा ठेकेदार और अफसर चला रहे हैं। सरकार ने तो आँख व कान बंद कर रखी है। किसी ने पूछा— “सरकार ने आँख व कान क्यों बंद कर रखे हैं”? तो उनका उत्तर था बुरा देखना भी पाप है और बुरा सुनना भी पाप है। इसलिए सरकार समाधि (ध्यान) की अवस्था में है। भक्तगणों

आप लोगों को भी न तो बुरा देखना चाहिए और न ही सुनना चाहिए, क्योंकि जो भी हो रहा है वह भगवान की मर्जी से हो रहा है।

भक्तगणों! घबराइये मत, अरे भाई धीरज का फल मीठा होता है। अभी कष्ट उठा रहे हैं तो कल सुख भी भोगेंगे। कुछ भक्तगण कह रहे थे, हां बाबा जी आप ठीक कह रहे हैं अभी तो मीठा फल ठेकेदार, अफसर और नेता खा रहे हैं, जब कुछ बच जाएंगे तब हम खाएंगे। हम तो क्या खाएंगे, बल्कि इस हाथ से लेकर उस हाथ से सरकार को दे देंगे। क्योंकि सरकार के पास पैसे कम पड़ते हैं तो टैक्स लगाकर पेट्रोल/डीजल तथा सब्जियों, खाने पीने का समान और दूध के दाम बढ़ाकर वसूलती है। आखिर सरकार को भी तो अंतर्राष्ट्रीय खेलों का आयोजन करना है जिसके दिल्ली को बढ़िया बनाना है और बढ़िया बनाने के लिए पैसे तो खर्च ही करने पड़ते हैं। यह अलग बात है कि जो काम पहले सिर्फ 1000 करोड़ रुपयों में होना था वह अब 2600 करोड़ रुपयों में भी नहीं हो पा रहा है।

भक्तगणों! यह सड़क का जाम बड़ा लाभकारी है, इससे बचने के लिए लोग घर से जल्दी निकलते हैं और समय से पहले अपने दफ्तर पहुंच जाते हैं। जो लोग रात में ठीक से नहीं सो पाते वह कार या बस में बैठे-बैठे नींद का आनंद उठा ले लेते हैं। जो लोग समय की कमी के कारण ईश्वर को याद नहीं कर पाते उन्हें भी ईश्वर याद आते हैं और उनका स्मरण कर लेते हैं। इसलिए रूको और फिर मौका मिले तो आगे चलो। भक्तगणों चलते-चलो, बढ़ते रहो। जीवन चलने का नाम है। दिल्ली भी चलती रहेगी, इसके काम भी चलते रहेंगे। जो पुराना है वह नष्ट होगा और उसकी जगह कुछ नया आएगा। यही प्रकृति का नियम है। इस जगत में जो भी है, नश्वर है। चलो इस भाग-दौड़ की जिन्दगी में जाम कुछ देर ठहरने का अवसर तो देता है। इस जाम को वरदान मानिए। इसे सकारात्मक भाव में लीजिए, किसी कवि ने ठीक ही कहा है—
“गोधन, गजधन, वाजधन और रतन धन खान।
जब आवे संतोष धन, सब धन धूल समान।।”

अपने मन में धैर्य एवं संतोष धन बनाए रहें। इसे न तो कोई चोर चुरा सकता है और न डाकू लूट सकता है। धन दौलत के पीछे मत भागो। इसे लूटने वालों को लूटने दें, क्योंकि वह आपके वश का काम नहीं है। आप लोग तो बस ईश्वर का भजन कीजिए। दुख, क्रोध, व खीझ मनुष्य के लिए पाप एवं हिंसा का कारण है। इसलिए हे भक्तगणों! अपने मन में हिंसा का विकार मत लाइए क्योंकि “अहिंसा परमो धर्मः” है। हम भारतवासी अहिंसा के पुजारी हैं हालांकि इस अहिंसा के पालन के चलते ही पिछले दो-तीन हजार वर्षों से भारत में शक, हूण, कुषाण, खिलजी, तुर्क, मुगल, उच, फ्रांसीसी, पुर्तगाली एवं ब्रिटिश लोग यहां आते रहे और बसते गए। भक्तगणों हमने इन सबको भी आत्मसात कर लिया और ये भी अहिंसा के पुजारी बनते गए। तभी तो अपना देश विविधता में एकता की मिसाल है और अपना भारत महान है।

भक्तगणों! हम सब बहुत ही सहनशील बन चुके हैं। यदि कोई हमें सताता है तो भी हम उसे फूल देते हैं। इसीलिए न तो क्रोध करें, न हिंसा और न ही दुख; क्योंकि—
दुख पुरुषार्थ की करवट है, सुख श्रम की परिणिति का घर है।
धूप-छांव से कैसा झगड़ा, कभी इधर है, कभी उधर है”
भीड़ एक साथ चिल्लाई—जय हो बाबा दिल्ली वाले की, “...
“दिल्ली वाले बाबा की जय”...

अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद : विश्व के लिए खतरा

रामनारायण चौधरी
सहायक प्रबंधक



आतंकवाद! यह ऐसा डरावना शब्द है, जिसे सुनते दिलों की धड़कनें अनायास तेज हो जाती हैं, मन में खौफ पैदा हो जाता है, शरीर थर्रा उठता है। दहशत, खौफ, मौत का पर्याय यह शब्द आज लोगों के दिलो-दिमाग से हटाने पर भी नहीं हटता है, खासकर जो इसके भुक्तभोगी हैं। धमनियों एवं शिराओं में रक्त संचार का प्रवाह आतंकवाद का नाम सुनते ही गतिहीन हो जाता है।

आतंक का सरल अभिप्राय भय और डर पैदा करना तथा लोगों के दिलो-दिमाग में खौफ व दहशत फैलाना है। इस प्रकार के कृत्य को अंजाम देकर अपने उद्देश्य की पूर्ति करना ही आतंकवाद है। अतः “आतंकवाद कोई विचारधारा या सिद्धांत नहीं अपितु एक तरीका, एक प्रक्रिया या फिर एक उदाहरण है जिसका प्रयोग कर कोई भी राज्य, राजनीतिक संगठन, स्वतंत्रतावादी समूह, अलगाववादी संगठन, जातीय या धार्मिक उन्मादी अपने उद्देश्य को प्राप्त करना चाहते हैं।” वर्तमान सदी के दौर में आतंक जो स्वरूप है, वह धिनौना व काफी चिंताजनक है। आतंकवाद की कोई न जात है और न पात है और न कोई धर्म। बस भटके हुए लोग इसके पुजारी हैं जिनके मन में न तो दया है अथवा न धर्म है। वे इस खौफनाक घटना को अंजाम देने के लिए हमेशा तत्पर व आतुर रहते हैं ताकि डर तथा दहशत का संसार कायम रहे।

विश्व मानचित्र का कोई भी महाद्वीप आज आतंक के काले साये से शायद ही अछूता नहीं है। अमेरिका, इंग्लैण्ड, रूस, चेचन्या, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, इराक, फिलिस्तीन, बांग्लादेश, इंडोनेशिया, नेपाल आदि जैसे प्रमुख देश आतंकवाद की आग में झुलस रहे हैं। “वसुधैव कुटुम्ब” में विश्वास करने वाला तथा समूचे संसार को सत्य व अहिंसा का पाठ पढ़ाने वाला भारत भी पिछले कई दशकों से आतंकवाद के सामने विवश पड़ा हुआ है। इसी विवशता तथा कमजोरी का फायदा उठाते हुए आतंकवादी दिन-प्रतिदिन एक से एक बढ़कर नये-नये तरीकों से आतंकवाद की घटनाओं को अंजाम दे रहे हैं। भारतीय प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी की 1984 में हत्या एवं राजीव गांधी की 1991 की हत्या, 1993 का मुम्बई विस्फोट, संसद भवन पर हमला, समझौता एक्सप्रेस में बम विस्फोट आदि अनगिनत उदाहरण हैं। भारत के पूर्वोत्तर राज्य, जम्मू-कश्मीर, झारखण्ड, छत्तीसगढ़, आन्ध्र प्रदेश, उड़ीसा आदि राज्यों में आतंकवाद तथा नक्सलवाद की घटनाएं घटित होना सामान्य बात हो गयी है।

विश्व के अन्य देशों में भी आतंकवाद की अनगिनत घटनाओं को अंजाम दिया जा चुका है तथा इसका दस्तूर आज भी जारी है। 1993 तथा 1994 में बेरुत में अमरीकी सैनिक शिविर तथा अमरीकी दूतावास पर भयंकर बम विस्फोट, 26 फरवरी 1998 को न्यूयार्क के वर्ल्ड ट्रेड सेंटर पर बम विस्फोट, लंदन के भूमिगत ट्रेन में बम विस्फोट, 11 सितंबर,

2001 को न्यूयार्क के वर्ल्ड ट्रेड सेंटर, पेन्टागन तथा अन्य प्रमुख स्थलों पर सुनियोजित दंग से एक साथ हवाई हमला अपने आप आतंकवादियों का हौसला बयान करती है।

आतंकवाद के कारण :

प्रश्न उठता है कि विश्व में आतंकवाद फैलाने के लिए जिम्मेदार कारक व तत्व क्या-क्या हैं? इसमें खाद पानी देकर सींचने वाला कौन है? विश्व में आज तक हुए आतंकवादी घटनाओं के कारणों को तह में जाकर तहकीकात की जाए तो कुछ तस्वीरें हमारे सामने स्वतः उभर उठती हैं। इसके मुख्य कारक हो सकते हैं— उपनिवेशवाद, राष्ट्रीयता की पहचान, सम्पन्न, मजबूत व सशक्त राष्ट्रों के राजनीतिक, सामरिक एवं आर्थिक हित, सरकारों की उपेक्षापूर्ण नीति, सामरिक दुर्बलता, गरीबी, बेरोजगारी तथा भुखमरी की वजह से भटके हुए लोग, धर्म कट्टरतावाद, शस्त्र व मादक-द्रव्यों का अवैध व्यापार, आदि-आदि।

उपनिवेशवाद के तहत शक्तिशाली राष्ट्रों ने कमजोर राष्ट्रों को अपने अधीन कर उनके संसाधनों को अपने हित में उपयोग करने तथा उनके द्वारा गतिविधियाँ अपनाकर त्रस्त राष्ट्रों की जनताओं में स्वतंत्रता की भावना पनपी जो कि औपनिवेशिक प्रशासनों (देशों) को सहजता से स्वीकार नहीं थी।

सोवियत संघ तथा कुछ अन्य राष्ट्रों की विस्तारवादी नीति के तहत कई स्वतंत्र छोटे-छोटे राज्यों तथा उपनिवेश को मिला लिया गया। उनकी सभ्यता व संस्कृति भिन्न थी। सबों को मिलाकर चलना असंभव था। जैसे-जैसे इन शासित राष्ट्रों की शक्तियाँ मजबूत होती गई, राष्ट्रीयता का आंदोलन उग्र हुआ, शायद इसके लिए आतंकवादी घटनाओं का सहारा लेना ही उनके लिए विकल्प था।

कई बार विश्व मानचित्र पर अपना दबदबा कायम करने या फिर अपने निहित स्वार्थों के लिए कुछ समर्थ राष्ट्र दूसरे राष्ट्रों पर अपना अधिपत्य कायम कर लेते हैं। इसका स्पष्ट उदाहरण पहले अफगानिस्तान में रूस की दखलंदाजी थी। यह संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे राष्ट्र को मंजूर नहीं हुआ, फलतः उसने पाकिस्तान को समर्थन देकर तालिबान जैसे रक्त बीज जैसे राक्षस को पैदा किया और उन्हें अकूत धन एवं हथियार मुहैया कराए। लेकिन रूस की सेनाओं की वापसी के बाद यही तालिबान अमेरिका के गले की फांस बन गए जिन्हें आज तक झेल रहा है। ठीक इसी तरह से संयुक्त राज्य अमेरिका ने अपनी विस्तारवादी नीति का अनुपालन करते हुए खाड़ी देशों में अपनी उपस्थिति सुनिश्चित करने के लिए इराक पर कब्जा जमा लिया। इराक के बारे में क्या-क्या कूटनीति, राजनीति, झूठनीति एवं दादागिरी की नीतियाँ अपनाई गईं, यह जग जाहिर है। इन दोनों घटनाओं का ही नतीजा है कि दुनिया भर में इस्लामिक कट्टरपंथ को एक उर्वर जमीन मिली, जहां



वह तेजी से फल-फूल कर आतंकवाद का रूप ले रहा है। यहां मजे की बात यह है कि अधिकतर इस्लामिक देश एक तरफ जहां अमेरिका के साथ वफादारी के कसीदे पढ़ रहे हैं, वहीं दूसरी तरफ आतंकवाद को धन, हथियार, प्रश्रय एवं प्रशिक्षण दे रहे हैं।

सरकारों की उपेक्षापूर्ण तथा भेदभाव परक नीति आतंकवाद व अलगाववाद के अन्य प्रमुख कारक है। जब राष्ट्रीय सरकारों द्वारा किसी जातीयता विशेष या क्षेत्र विशेष की उपेक्षा की जाती है, उनकी समस्याओं के समाधान हेतु न आगे आती हैं और न ही उनके समुचित विकास कार्य में दिलचस्पी दिखाती है।

मुस्लिम कट्टरवाद व शिक्षा, जेहाद का नारा, आतंकवाद के लिए भी कम जिम्मेदार नहीं है। ज़रा गौर करें तो तस्वीर स्पष्टतः उभरकर आती है कि ज्यादातर इस्लामिक देश ही इसके चपेट में हैं तथा इसके फैलाने में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से इसी जमात के अधिकांश लोग हैं। अधिकांश आतंकवादी प्रशिक्षण केन्द्र व अड्डे भी इन्हीं देशों से संचालित होते हैं।

कंधार विमान अपहरण प्रकरण, रूबिया अपहरण कांड जिसमें भारत सरकार द्वारा आतंकवादियों को छोड़ा गया, 13 दिसम्बर, 2001 को देश के संसद भवन पर हमले करने तथा इसमें आरोपित गुरु अफजल की फाँसी पर कोई ठोस पहल नहीं करना जैसी घटनाओं ने आतंकवादियों का हौसला बुलंद करने में काम किया है।

आतंकवादी गतिविधियां तथा इसमें प्रयोग किये जाने वाले हथियार :

आतंकवादियों द्वारा दहशत फैलाने हेतु नये-नये घटनाओं का अंजाम दिये जाते हैं उनमें से प्रमुख हैं- भीड़ वाले इलाकों में बम विस्फोट करना, अचानक अंधाधुंध गोली-बारी (फायरिंग) कर हत्या करना, सार्वजनिक स्थानों तथा सार्वजनिक वाहनों को निशाना बनाना, दूतावास, आण्विक संयंत्र, आयुध डिपो, सरकारी व व्यापारिक इमारतों को निशाना बनाना, अपहरण व ब्लैक मेलिंग करना, आगजनी करना आदि। आतंकवादियों की नजर आण्विक हथियार (परमाणु बम आदि) बनाने पर है। कल्पना कीजिए इसके दुरुपयोग के क्या दुष्परिणाम हो सकते हैं।

आतंकवाद का अंत :

विश्व में आतंकवाद हमेशा ही किसी-न-किसी रूप में विद्यमान रहा है। विश्व के सामने वर्तमान में आतंकवाद का जो रूप उभर कर आया है एवं उसके परिणाम जिस रूप से आ रहे हैं उससे आज पूरी दुनिया मुक्त होना चाहती है। यही वजह है कि विश्व मंच पर प्रमुख सम्मेलनों में उसके खात्मे के लिए विश्व के नेताओं एक स्वर में आवाज उठायी है। पूर्व अमरीकी राष्ट्रपति जार्ज बुश ने इसके लिए एक विशेष अभियान चलाया था जो "एंडयूरिंग जस्टिस (Enduring Justice)" के नाम से जाना जाता है। अमेरिका ने लोकतंत्र को जीवंत बनाये रखने के लिए अफगानिस्तान के तालिबान के खिलाफ एवं अन्य संगठनों के विरुद्ध कदम कसी है। आतंकवाद को समाप्त करने की अमरीकी पहल सराहनीय है लेकिन दुख की बात है कि यह अभियान खासकर उसने अपने हित को साधने हेतु किया है।

विश्वव्यापी आतंकवाद को जड़ से मिटाने के लिए सभी राष्ट्रों को मिलजुल कर सामूहिक प्रयास करने होंगे। इसके लिए एक मंच पर एकत्रित होकर भारतीय संस्कृति का उद्घोष "वसुधैव कुटुम्बकम्" को चरितार्थ करने के लिए दृढ़ संकल्प के साथ आगे होना होगा। संयुक्त राष्ट्र संघ के तत्वाधान में आतंकवाद के विनाश के लिए व्यापक कार्यक्रम बनाया जाना चाहिए। जिसका नेतृत्व अमेरिका, भारत, इंग्लैण्ड, चीन जैसे विश्व के प्रमुख देशों को दिया जाना चाहिए एवं इसमें किसी भी प्रकार के भेदभाव की गुंजाइश तक नहीं हो।

भारत को इसका सबक श्रीलंका, रूस तथा चीन से सीखना चाहिए अन्यथा कंधार, रूबिया अपहरण जैसी घटनाएं घटती रहेंगी। आतंकवादियों का हौसला बुलंद होता जायेगा। वोट की राजनीति की जगह, किसी खास समुदाय धर्म के प्रति तुष्टिकरण जैसे नीति अपनाने की जगह उससे सख्ती से निपटना चाहिए। कानून-व्यवस्था तथा इसकी सुनवाई की प्रक्रिया में तेजी आनी चाहिए।

सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा वैज्ञानिक प्रगति के साथ प्रत्येक राष्ट्र को नैतिक क्षेत्र में भी प्रगति करनी चाहिए। सभी नागरिकों को बिना किसी भेदभाव के उन्नति तथा विकास हेतु पर्याप्त व्यवस्था करनी चाहिए। आतंकवाद से प्रभावित प्रत्येक राष्ट्र को आतंकवाद से लड़ने के लिए अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उच्च स्तरीय प्रशिक्षण की व्यवस्था होनी चाहिए। सुरक्षाबल को अत्याधुनिक हथियार उपलब्ध कराए जायें जो आतंकवादियों पर भारी पड़ें।



अंत में मेरा तो यही नारा होगा—

**"आतंकवाद से आहत है देश-विदेश,
आयें मिलकर इसके खात्मे हेतु करें सामूहिक प्रयास
तभी तो होगा इसका समूल नाश।"**

—

होली में प्राकृतिक रंगों द्वारा स्वास्थ्य सुरक्षा

डॉ. विनोद कुमार श्रीवास्तव

परामर्शदाता (जैव रसायन),
इस्पात जनरल अस्पताल, उड़ीसा

भारत वर्ष, विशेषकर उत्तरी भारत में रंग-बिरंगी होली का त्यौहार मार्च महीने में पूर्णिमा के समय अति उत्साह से मनाया जाता है। यह बसंत ऋतु के साथ आशा और आकांक्षा के शुभ संकेत लाने वाला तथा जीवन में खुशियाँ भर देने वाला त्यौहार है। इस अवसर पर लोग पारस्परिक मेल-जोल और भाई-चारे को दर्शाते हुए एक दूसरे के ऊपर रंग डालकर और गुलाल लगाकर आमोद-प्रमोद करते हैं। परन्तु कभी-कभी छोटी-छोटी गलतियों के कारण यह मनमोहक त्यौहार हमारे लिए कष्ट दायक हो जाता है। होली से होने वाले नुकसान में मुख्य भूमिका होती है बाज़ार में धड़ल्ले से बेचे जाने वाले रंगों और रज्जकों की। रासायनिक दृष्टिकोण से ये विषाक्त एवं शरीर को हानि पहुँचाने वाले पदार्थों से बने होते हैं। ये हमारे वस्त्रों, घर के दीवार व फर्शों मात्र को ही नहीं प्रभावित करते बल्कि हमारी त्वचा, आँख और केश को भी मुख्य रूप से नुकसान पहुँचाते हैं। संश्लेषित रंगों का हमारे शरीर और स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है विशेष रूप से, इससे बच्चे अधिक प्रभावित होते हैं। संश्लेषित रंगों जैसे काले में शीशा, हरे में कापरसल्फेट, लाल में मरकरी सल्फाइड की उपस्थिति इनकी विषाक्तता के लिए उत्तरदायी है। बहुत से गुलालों-अबीरों का उत्पादन एस्बेस्टस, चॉक या सिलिका पाउडर पर आधारित होते हैं। यह पूर्णतः सिद्ध हो चुका है कि एस्बेस्टस एक कैंसर कारक रसायन है। सिलिका त्वचा में प्रवेश कर उसमें शुष्कता और बिवाई उत्पन्न करता है।



रंगों में चमक प्रदान करने के लिए शीशों और अबरख के चूर्ण मिलाये जाते हैं। बहुत से रंगों के क्षारीय गुणों के कारण जब ये हमारे नेत्रों में प्रवेश करते हैं तो नेत्र ज्योति को बुरी तरह प्रभावित कर सकते हैं। जिन रंगों में इंजन तेल या डीज़ल इत्यादि उपस्थित होते हैं, वे त्वचा में एलर्जी, अस्थायी अंधापन जैसे शारीरिक विकार पैदा करते हैं। यह कितनी अजीब सी बात है कि हम दिन-प्रतिदिन की सावधानियों सहित विभिन्न युक्तियों की सहायता से अपने सौन्दर्य, विशेषरूप से त्वचा, आँख और बालों को सालों-साल स्वस्थ बनाये रखते हैं। परन्तु एक दिन की मौज-मस्ती के लिए होली में अपने शरीर को हानिकारक रसायनों से जानबूझ कर नुकसान पहुँचाने से बाज़ नहीं आते। होली में खेले जाने वाले रंगों का उत्पादन ज्यादातर लघु स्तर के उद्योगों में किया जाता है। जिनके विक्रय हेतु गुणवत्ता सम्बंधी नियमन अत्यन्त शिथिल होते हैं। उपरोक्त कारणों से इन संश्लेषित रंगों तथा रज्जकों का

परित्याग करना हमारे स्वास्थ्य हित में होगा व सही मायने में सुरक्षित होली खेलने के लिए पर्याप्त सावधानियाँ बरतना लाभकारी है।

संश्लेषित/रसायनिक रंगों में पाए जाने वाले हानिकारक तत्व

लेड ऑक्साइड, इंजन तेल, डीज़ल, मेलाचाइड, कापर सल्फेट, रोडामिना, मरकरी सल्फाइड, मीथील, वायलेट, औरेंज-11, आटा-अबरख डस्ट, लेड, कैडमियम, एस्बेस्टस-चाक व सिलिका पाउडर, क्षारीय आधारित।

संश्लेषित रंगों/रसायनों से होने वाले नुकसान या संभावित हानियाँ
विषक्त गुण, त्वचा एलर्जी कैंसर, नेत्र विकार, कैंसरजन, त्वचा सूखापन बिवाई घातक, अस्थायी अंधापन।

सावधानियाँ एवं सुरक्षात्मक उपाय :

- हमें संश्लेषित रंगों के विकल्प के रूप में प्राकृतिक, त्वचा व केश के अनुकूल वानस्पतिक या प्रतिष्ठित कम्पनियों द्वारा निर्मित रंगों का प्रयोग करना चाहिए।
- लोगों को होली खेलने के पूर्व रंगों के बचाव हेतु क्रीम (श्वेत नर्म, पीत नर्म, पराफिन) का इस्तेमाल लाभकारी होता है। शरीर के उन भागों को रंग से बचाना चाहिए जो अधिक संवेदनशील हैं।
- यदि बालों में रंग लगे हों तो उन्हें हल्के तीव्रता वाले शैम्पू से तत्काल धोना चाहिए।
- यदि रंगों के कारण किसी प्रकार के चकत्ते या दाने (एलर्जी) निकल गये हों तो अतिशीघ्र चिकित्सीय परामर्श से औषधि सेवन करें।
- होली में टोपी पहन कर बालों को रंगों/पेन्ट के दुष्प्रभाव से बचाना चाहिए।
- चेहरे तथा अन्य खुले हुए शारीरिक अंगों पर मायश्चराइज़र, पेट्रोलियम जेली, नारियल या सरसों के तेल का मोटा लेप करने से रंग को त्वचा में प्रवेश होने से रोका जा सकता है।
- दाँतों को आवांछनीय धब्बों से बचने हेतु डेंटल कैंप का इस्तेमाल करें।
- शरीर को समूचित ढंग से ढकने वाले वस्त्रों को पहनना चाहिए और सूखे भागों जैसे नाखूनों, तलवों और कुहनियाँ इत्यादि में वैसलीन लगाना चाहिए।
- होली खेलने के उपरान्त रंगों का असर अच्छी तरह हटाना ज़रूरी है। त्वचा को तरोताज़ा करने हेतु सोयाबीन पाउडर या बेसन का दूध में लेप (पैस्ट) बनाकर लगाना चाहिए। समुद्री नमक, ग्लिसरिन और सुगाधिन तेल की कुछ बूँदों के मिश्रण में जीवाणुनाशक तथा फफूँदीनाशक गुणों के कारण इसका प्रयोग रासायनिक रंगों के दुष्प्रभाव को उदासीन करने में सहायक होता है।
- रंग के प्रभाव को गरम जल और मायश्चराइज़िंग साबुन से धीरे-धीरे रगड़कर छुड़ाना चाहिए। भारी मात्रा में रासायनिक रंग व पेन्ट इत्यादि को होली के पश्चात् पानी में धुला जाता है जो पानी में मिलकर नालियों, नदियों तथा मिट्टी में मिलकर वातावरण और हमारे पर्यावरण को प्रदूषित करते हैं।



इसको घर ही रहने देना

मंजू सिंह
(पत्नी, श्री संजीव कुमार सिंह, स.प्र.)

मिलकर हमने इसे बनाया,
इसको घर ही रहने देना,
गंध प्यार की घुली हुई है,
इसको घर ही रहने देना।
एक-एक पैसे जोड़-जोड़ कर,
अरमानों को तोड़-तोड़ कर,
इस सपने को साकार बनाया,
इसको घर ही रहने देना।।
मूल्यवान सामान बहुत ही,
मिलते इसे सजाने को,
नहीं अजायब घर बन जाये,
इसको घर ही रहने देना।
ईट और गारे से निर्मित,
यह बेजान मकान नहीं है,
बसे हुए हैं सुख-दुख इसमें,
इसको घर ही रहने देना।।



दीवाली
(बाल कविता)
कु. सुरभि गोयल, कक्षा 5,
(सुपुत्री, श्री विशाल गोयल, क्षेत्रीय प्रबंधक)

आई दीवाली प्यारी-प्यारी,
खुशियाँ लाई जग में सारी।
घर-घर में हम दीप जलाएँ,
मीठी-मीठी मिठाइयाँ खाएँ।
शाम को हम पूजा करें,
पूरे जग में घूम-फिरें।
मोमबत्तियों से घर को सजाएँ,
साथ ही वंदनवार लगाएँ।
इस त्यौहार पर हम रंगोली बनाएँ,
रोशनी से घर सारा जगमगाएँ।
दिए-बत्तियों से घर को सजाएँ,
साथ ही पेड़ों पर भी लगाएँ।
सबको दीवाली शुभकामना कार्ड भेजें,
दिये जो बुझें तो फिर से जला दें।
जल्दी से मिलजुलकर खाना सब खाएँ,
मजे से पटाखे जलाएँ और फिर सो जाएँ।

नए पंख

नए पंख नई उड़ान
छूने निकली मैं आज नया आसमान
मन के पंखों पर सपनों की उड़ान
खोजने लगी हूँ मैं कुछ नए आयाम।
उन्मुक्त आकाश उन्मुक्त मन
न इसकी कोई सीमा न इसको कोई बंधन
न है कोई बंदिश न है कोई उलझन
नए-नए पंखों की नई उड़ान।
दिल करे मेरा मैं अविरल नदिया बन जाऊँ
इतराऊँ, बलखाऊँ या कभी सागर में मिल जाऊँ
न मेरा कोई घाट, न मेरा किनारा,
बस बहते जाना ही है मेरी 'धारा'।
दिल करे मेरा मैं स्वच्छंद पंछी बन जाऊँ
चोंच में तिनका दबाएँ अपना एक नया बसेरा बनाऊँ
न कोई तूफान न कोई डर
बस नई ऊँचाईयाँ पाना ही है ध्येय सारा।
दिल चाहे मेरा मैं तितली बन जाऊँ
फूलों पर इतराऊँ, मड़राऊँ
न मेरा कोई घर, न मेरा कोई घाट
बस खुशबु फैलाना, रंग बिखरना ही है काम सारा।
दिल चाहे मेरा मैं हवा का झोंका बन जाऊँ
कभी श्वास बन लोगों को जीवन दूँ
कभी मेरी तपिश में शीतलता लुटाऊँ
न भरी कोई रंग न मेरा कोई रूप
बस प्राणों को जीवन देना ही है सार सारा।
पर जब हकीकत में टटोलूँ खुद को
तो कहीं भी खुद को ढूँढ न पाऊँ
बंदिशों में जकड़ी, सीमाओं में बंधी
अपने पंखों को कतरा हुआ पाऊँ
नए पंख नई उड़ान।
सिर्फ सपनों में ही मुमकिन है एक नया आसमान
..... और कुछ अधूरे अनसुलझे से आयाम।



निधि एस. नागेन्द्र
(सहायक प्रबंधक)

दिनांक 20/01/2010

राजभाषा कार्यान्वयन में श्रेष्ठ कार्य-निष्पादन हेतु प्रशंसना पुरस्कार प्रदत्त।

दिल्ली बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्त्वावधान में आयोजित उपर्युक्त प्रतियोगिता में

राष्ट्रीय स्तर पर उत्कृष्ट कार्य हेतु

प्रमाण-पत्र

वर्ष 2008-09

अध्यक्ष

दिल्ली बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति

भारत सरकार, गृह मंत्रालय (राजभाषा विभाग) के तत्त्वावधान में गठित
दिल्ली बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति
(संयोजक : पंजाब नेशनल बैंक, प्र.का., नई दिल्ली)

अंतः बैंक राजभाषा शील्ड प्रतियोगिता
(द्वितीय स्तर-आजो हैदर)